प्रेम पत्र

5—78

प्यारे दोस्त एच. एम. पटेल साहब,

सादर प्रणाम ।

आपकी इज्जत जब से भारतवर्ष के कोने-कोने में फैली है तबसे मैं आपका असली शुभचिन्तक बन गया हूं । मुझे यह जानकर और भी खुशी हुई कि आपने दस हजार, पांच हजार और एक हजार के नोटों की होली जलवाने की कोशिश की ।

लेकिन मुझे इस बात का बहुत अफसोस है कि इस अनोखे कदम की वार्निंग आपने अपने सिवाय किसी को न दी । यूं तो देश के सारे बैंक आपके इशारे पर चलते हैं लेकिन आप यह भी जानते हैं कि जनता आजकल बहुत समझदार हो गई है । क्योंकि जनता के पास हजार, पांच हजार के नोट का होना तो दर-किनार रहा, हमारे देश की जनता ने ऐसे नोट देखे भी नहीं हैं । शायद उन्हें यह भी मालूम न हो कि आप इतने बड़े नोट छापते भी हैं ।

यदि आपके मन में जनता का कुछ फायदा करने का ख्याल था तो आपको सौ, पचास, बीस और एक रुपए के नोट भी रद्द कर देने चाहियें थे । क्योंकि आप जानते हैं कि आजकल रुपया बाजार में कुछ खरीद नहीं पा रहा है । कीमतें बढ़ रही हैं और रुपए की ताकत घट रही है ।

इसलिए आपकी सेवा में एक सुझाव रखना चाहता हूं । रिजर्व बैंक से कहिये कि सारे नोट वापिस लेकर उनके बदले सिक्के दे दे । इस प्रकार काला धन रखने वालों को बड़े-बड़े गोदाम किराये पर लेने पड़ेंगे और रुपये का लेन-देन करने के लिये बड़े-बड़े ट्रकों में उनको भर कर ले जाना पड़ेगा । इससे स्मगलरों की सेहत पर बुरा असर पड़ेगा और आपकी सेहत पर अच्छा ।

आपका

चितली

मुख पृष्ठ पर

चार कदम पीछे रहो तुम
बात नहीं मानी ओ याड़ी
ऐसा वैसा मैं भी नहीं हूँ
भाले का हूँ अव्वल खिलाड़ी।
न इसमें कोई मेरी गलती
न कोई इसमें दोष मेरा
इतने पास खड़े हो जब
स्वेटर अटका उसमें तेरा ॥
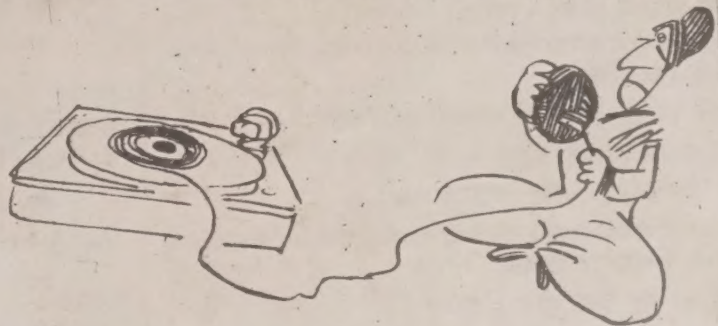
अंक : ५, २ फरवरी से ८ फरवरी १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ६५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा । रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें । —सं०

जाहिद अहमद, कानपुर

प्र० : वो इतना बता दें कभी पास आकर, मिला है उन्हें क्या हमें यूं मिटाकर ?

उ० : क्यों भूतों की बातों पर विश्वास लाएँ, जो मिट ही चुके हैं उन्हें क्या मिटाएँ ।

दीन बंधु उपाध्याय, पूना

प्र० : भारतीय शासकों में बूढ़े काफी घुस गए हैं, नया खून कैसे आये ?

उ० : संविधान में एक यह, संशोधन करवायें,
बूढ़े बाबा जहर के इंजेक्शन लगवायें ।

हरभजन सिंह वर्मा, रोहतक

प्र० : काकाजी, रेल दुर्घटनाएं बहुत हो रही हैं क्या करें ?

उ० : रेल यात्रा के लिए, जब-जब उठे उमंग,
बिस्तर कपड़े हों न हों, कफन राखिए संग ।

कंवलजीत नारंग, इंदौर

प्र० : देश के लिए किए गये त्याग में और प्रेम के लिए किए गए त्याग में क्या अन्तर है ?

उ० : देखें प्रेमी-प्रेमिका भांति-भांति के ख्वाब,
'रुखसाना' से पूछिए फौरन मिले जवाब ।

तेजपाल सिंह भाटिया, कटनी

प्र० : आपको भगवान ने खुद बनाया था, या ठेके पर बनवाया था ?

उ० : बनवाया भगवान ने, ऐसा नहीं प्रमाण ।
मम्मी-पापा ने किया, काका का निर्माण ।।

भूपेन्द्र वेवगुरु टर्नर, दिल्ली

प्र० : आपके कारतूस मेरे प्रश्न पर क्यों नहीं चलते ?

उ० : प्रश्न आपका सामने आया पहली बार ।
उसे देखकर हो गया, कारतूस तैयार ।।

नरेन्द्र चौहान, फिरोजपुर छावनी

प्र० : प्यार का फल कैसा होता है काका ?

उ० : इश्क, मुहब्बत, प्रेम के होते भिन्न प्रकार ।
वैसा ही फल मिलेगा, जैसा होगा प्यार ।।

पनपालिया, अमरावती (महाराष्ट्र)

प्र० : कुछ मनुष्य लोभी-लालची क्यों होते हैं ?

उ० : ईश्वर में विश्वास नहिं, पैसे में हो भक्ति ।
वह ही होते लालची, जिनकी संग्रह-वृत्ति ।।

उमाशंकर राय, रांझी जबलपुर

प्र० : लड़का-लड़की में प्यार क्यों हो जाता है ?

उ० : चुम्बक-लोहे का सभी जानत हैं व्यवहार ।
इसीलिए 'कम्पलसरी', दोनों का है प्यार ।।

रामचरण जायसवाल, बड़वा (म० प्र०)

प्र० : कोई लड़का अपने तकिए के नीचे किसी लड़की का [फोटो] रखकर सोए तो ?

उ० : ऐसे बंदे के सदा, गंदे हों जज्बात ।
सपने लड़की के उसे, दीखें सारी रात ।।

अन्नु, मोनी, सानी एवं कमल, दिल्ली-६

प्र० : काका जी, हम आपका अपहरण कर लें तो ?

उ० : काकी जी का जायगा, चरणसिंह पर तार ।
तुम सब पकड़े जाउगे, पहुंचो कारागार ।।

एम० असलम, तसनीम, पटना

प्र० : वह कौनसा समय होता है, जब लड़की फूली नहीं स[माती ?]

उ० : जयमाला लेकर चली, दुल्हन दूल्हा पास ।
तन पुलकित, हो मन मगन, उछले नौ-नौ बांस ।।

राकेश कपूर, करनाल

प्र० : बच्चों को टाफी से मुहब्बत होती है, तो आपको ?

उ० : स्वाभाविक मुहब्बत है, शराबी को साकी से,
बच्चों को टाफी से, काका को काफी से ।

धर्म सिंह बाहल, बेरमो

प्र० : वफा जिनसे की, बेवफा हो गए; वो वादे मुह[ब्बत के] क्या हो गए ?

उ० : जरूरत किसी की रफा हो गई,
वफा आपकी सब सफा हो गई ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतू[स]
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मा[र्ग]
नई दिल्ली-११०००२

ादमी घटिया प्रेम के गोल तिकोन की एक बासी कहानी
ी ही बासी जितनी फ्रन्टियर ढावे की माह (उड़द) की
ी है। रिसी नाम का एक युवक मूंगफलियां वेचने का
ता था, रोज पांच-सात रुपये की कमाई हो जाती थी।
ाचछे पहनता था। उसे पता था कि चिथड़ा कांड के
पड़े कहां मिलते हैं। वह विवाहित था, वीवी काजल
दी के लिए रोज पैसों की डिमांड करती। मूंगफली
ई से कहां तक उसकी फरमाईश पूरी करता? उसके
क ही रास्ता रह गया था—

ASH CHOPRA'S

DOOSIRA AADMI

कि वह अपने व्यापार का विस्तार करे। आजकल व्यापार का विस्तार एक ही तरीके से संभव है, वह है जोरदार एडवरटाइजिंग—प्रचार करके। एड कम्पनियों की सेवायें बड़ी महंगी हैं। एक मूंगफली की रेहड़ी वाला विज्ञापन कम्पनी का खर्च कहां से लाता? रिशी ने किसी ऐसे सस्ते विज्ञापन माध्यम की तलाश शुरू कर दी जो उसकी पहुंच के अन्दर हो। आखिर उसे एक ऐसी भारतीय प्राचीन संस्था मिल ही गयी। भारत में सदियों से महिलाओं के रूप में असंगठित विज्ञापन का जोरदार साधन मौजूद है। एक महिला के कान में कोई वात डाल दीजिये, शाम होते-होते वह वात सारे शहर में फैल जायेगी। इस काम में असली एक्सपर्ट घर में वर्तन मांजने वाली होती है। एक घर की बात दूसरे घर पहुंचाने में वे माइक्रो वेव्स को भी मात कर जाती हैं। रिसी को रखी नाम की ऐसी ही एक भांडे मांजने वाली मिल जाती है जो कई घरों में काम करने जाती थी। उसने रिसी के लिये प्रचार कार्य करने का काम स्वीकार किया। समझौता यह था कि वह हर घर में उसकी मूंगफली की तारीफ करेगी। वदले में उसे हर शाम ५० ग्राम मूंगफली का पैकेट रिसी दे दिया करेगा। जल्दी ही इस प्रचार के फलस्वरूप उसका व्यापार बढ़ जाता है। अब उसे दस ग्यारह रुपये कमाई होने लगी।
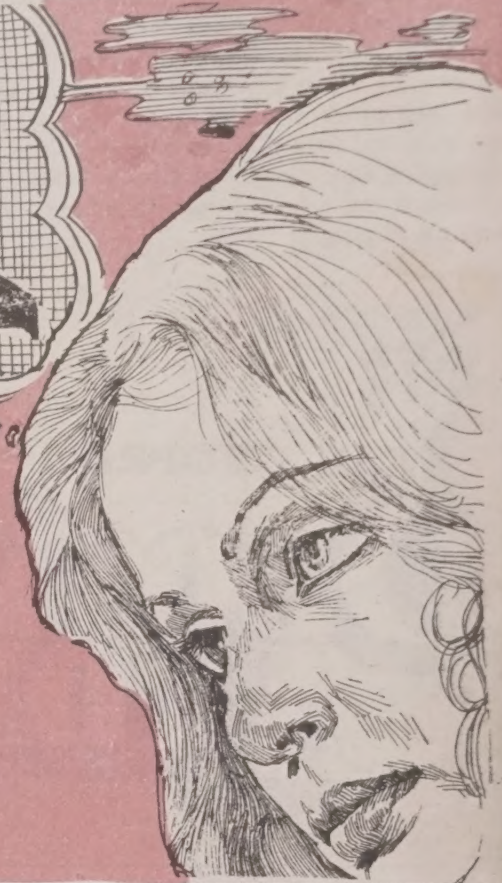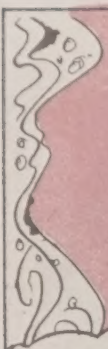
रिसी को देख कर रखी को अपने भूतपूर्व प्रेमी शशि सैकल की याद आ गयी। कितनी मिलती-जुलती शक्ल है। सैकल के साथ के वह दिन कितने प्यारे थे। शशि सैकल एक द ाड़ी वाला था, रोज सुवह अखबार और बोतलों के चक्कर में निकल पड़ता। दोपहर तक कवाड़ बेच कर रखी के पास आता, फिर दोनों निकट के पार्क में जा बैठते और भुने चने तथा गुड़ खाते रहते। किसी दिन रद्दी अच्छी बिक जाती तो शशि उसे घटी दरों पर लगी फियर लैस नाडिया की पिक्चर दिखाने ले चलता। रखी साहब लोगों के घरों से जब-तब सिगरेटें चुरा कर लाती और शशि को पिलाती। दोनों शीघ्र ही शादी करके झुग्गी बसाने की योजनायें बनाते, लेकिन एक दिन रखी के सारे सपने धूल में मिल गये। शशि उस दिन अपने साइकिल के कैरियर पर रद्दी अखबारों की वोरी लाद कर ला रहा था कि उसका टायर पँचर हो गया। तेजी से आ रहे होने के कारण वह बैलेंस न बनाये रख सका और साइकिल समेत गिर पड़ा। उस पर रद्दी की बोरी गिरी। शशि कमजोर तो था ही, रद्दी की बोरी के नीचे दव कर मर गया, उसकी छाती की हड्डियां पिचक गयी थीं। रखी की दुनिया उस दुर्घटना ने उजाड़ दी।

धंधा में जुड़े होने के कारण रिसी और रखी नजदीक आते चले गये। बाद में रहस्योद्घाटन होने पर कि रिसी असल में शशि का ही भतीजा है, उससे प्यार करने लगी। उसने सोचा, चलो मुर्गी न सही चिकन ही सही, पुलाव न सही खिचड़ी ही सही और चाचा न सही भतीजा ही सही, दोनों साथ-साथ घूमने लगे। रिसी अपनी पत्नी निट्टू की ओर से उदासीन होता चला गया।
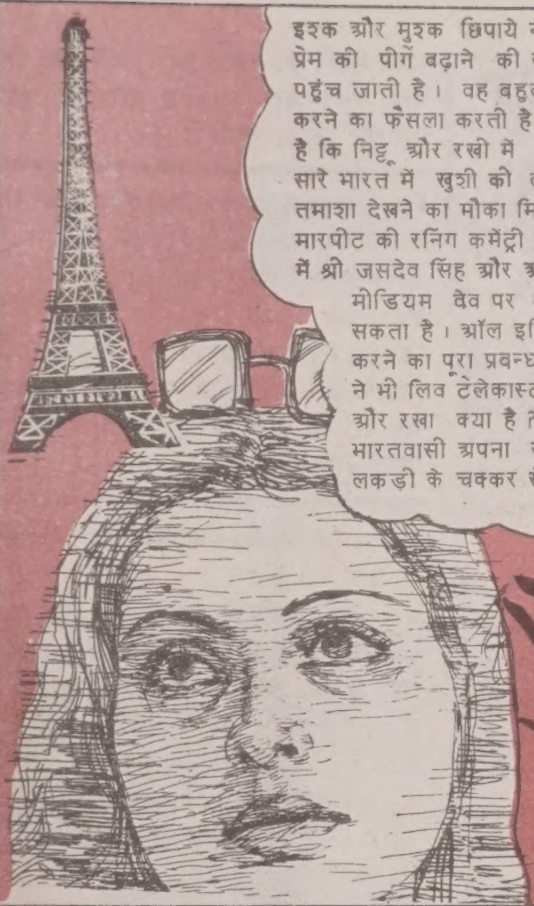
रिसी के रखी की ओर आकर्षित होने का एक और कारण भी था। रखी के पास गक गॉगल था जिसे वह प्रायः पहनती या सिर पर चढ़ाये रखती। उसने यह चश्मा किसी मेम साहब का उड़ाया था। रिसी की ललचाई नजर हमेशा गॉगल पर रहती। वह किसी प्रकार रखी को प्रसन्न कर वह गॉगल हथियाना चाहता था। चिलचिलाती धूप में मूंगफली की रेहड़ी लेकर गली-गली घूमते-घूमते आंखें दुखने लगती थीं। अगर वह गॉगल हाथ आ जाये तो यह समस्या हल हो जायेगी। किसी दिन रखी जब रोमांटिक मूड में होगी और रिसी से कुछ मांगने के लिये कहेगी यह सोच कर कि वह प्यार से उसका हाथ मांगेगा या दिल मांगेगा तो वह मौके का पूरा फायदा उठायेगा और उससे वह गॉगल मांग लेगा। अपनी जुबान रखने के लिये रखी को देना ही पड़ेगा।

इश्क और मुश्क छिपाये नहीं छिपता। रिसी की रखी के साथ प्रेम की पींगें बढ़ाने की खबर रिसी की पत्नी निट्टू के पास पहुंच जाती है। वह बहुत क्रुद्ध होती है और रखी से सामना करने का फैसला करती है। दोनों में ठन गई, बात फैल जाती है कि निट्टू और रखी में फ्री स्टायल मारपीट होने वाली है। सारे भारत में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सबको मुफ्त तमाशा देखने का मौका मिलेगा। ऑल इण्डिया रेडियो वाले मारपीट की रनिंग कमेंट्री का प्रबन्ध कर देते हैं। कमेंट्री हिन्दी में श्री जसदेव सिंह और अंग्रेजी में शुरजीत सैन करेंगे। इन्हें मीडियम वेव पर २९४.८ और ३०० मीटरों पर सुना जा सकता है। ऑल इण्डिया रेडियो के दूसरे स्टेशनों ने भी रिले करने का पूरा प्रवन्ध कर लिया। रेडियो की देखा-देखी दूरदर्शन ने भी लिव टेलेकास्ट का प्रबन्ध कर लिया। आखिर भारत में और रखा क्या है? ऐसे ही लड़ाई-झगड़ों को देख कर ही भारतवासी अपना जीवन सार्थक करते रहते हैं। नून, तेल, लकड़ी के चक्कर से कुछ देर के लिये राहत मिल जाती है।
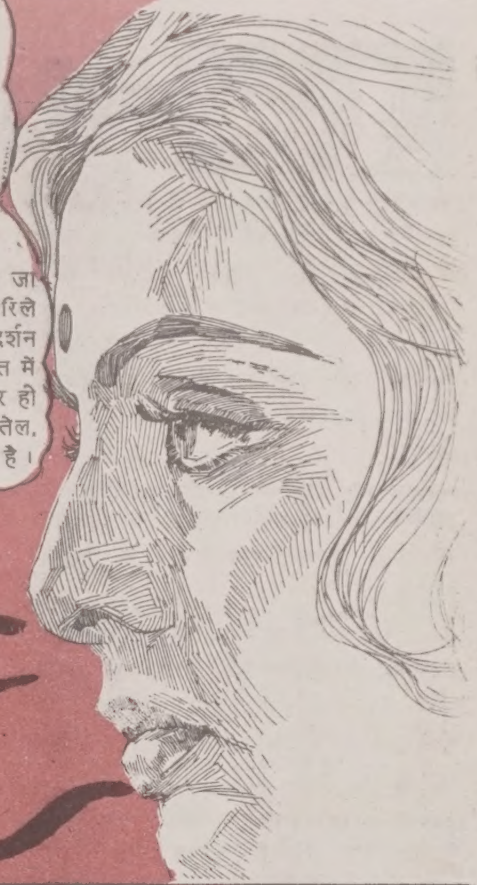
और पवित्र ब्रांड पापी का प्रवेश

ऐसे समय में सारा गुड़-गोबर करने पवित्र ब्रांड [illegible]क्षत साहनी कहानी में अचानक आकर अपनी टांग अड़ाते हैं। वह शायद इसलिये कि देखा कहानी में टांग अड़ाने पर कोई शुल्क नही लगा है। भारत में ऐसे लोगों की कमी नहीं है। हम पूछते है कि किसी का घर उजड़ता है तो उजड़ने दें, तुमको क्यों दर्द होता है? ऐसे शुगल [illegible] २ करोड़ जनता का मनोरंजन हैं। जरा रोना [illegible] मारपीट हो जाता। लोग तालियां बजाते हैं। [illegible] रिसी को समझाता है कि क्यों बेकार रखी के पीछे प[illegible]ह औरत तो कई घर खाकर आई है तेरी सारी मूंगफली [illegible], समेत्त बिकवा देगी। रखी को भी वह जता देता है कि रिसी की असल नजर उसके गॉगल पर है। दोनों अपने-अपने कदम पीछे खींच लेते हैं। हंगामा टल जाता है। देशवासी निराश हो जाते हैं।

अपने प्रश्न, केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

टी० एस० साहनी—बगीची पीरजी : आपको भी जनता सरकार में कोई मंत्रीपद मिल जाता तो आप क्या शुभ कार्य करते ?

उ० : प्रधान मंत्री का सर दर्द कुछ और बढ़ा देते। हम रोज एक उल्टा-सीधा बयान देते और प्रधानमंत्री उसके लिए क्षमा मांगते रहते।

जगदीश आमेटा—इन्दौर : मुझे एक पंडित ने बताया है, कि मेरे हाथ में पैसे की लकीर नहीं है।

उ० : क्या उलटी बात पूछी है आपने भी। आजकल तो लोग पंडितों से पूछते हैं, हमारे हाथ की बात छोड़ो, इसे तो हम खुद इस्तेमाल कर लेंगे। तुम यह बताओ, किसकी जेब में पैसा है।

विनोद कुमार अग्रवाल—कटक : पेन फ्रेंड्स क्लब में आपने फोटो छापा, धन्यवाद। अब क्या आप मुझे दीवाना के हास्य कलाकारों की कास्ट में हीरो का रोल देंगे।

उ० : अवश्य। पर इसके लिए आप अपना सिर लोहे का बनवा लीजिए। हमारे कलाकारों में चिल्ली को छोड़कर कोई भी ऐसा खिलाड़ी नहीं है जिसका सिर रोज न फूटता हो।

हंसराज गेरा—रेवाड़ी : भगवान की पूजा करने के बाद लोग क्या मांगते हैं ?

उ० : आजकल तो एक ही चीज मांगते हैं, कि तूने हमें वोट देने का अधिकार तो दिया, वोट वापस लेने का अधिकार भी दे दे।

सुरेश खुराना, पप्पी—जींद : आजकल हर चीज बिकती है। क्या आप भी किसी बाजार में बिकते हैं ?

उ० : दीवाना के सुपर बाजार में मूल्य केवल एक रुपया।

एस. सी. शर्मा 'अभिनव'—गढ़ा जबलपुर : यदि कोई आपके दिमाग का अपहरण कर ले तो ?

उ० : वह बददिमाग इस पर रोयेगा कि इस से तो किसी के एक किलो टमाटर उठा लाता तो अच्छा था।

परवेज आलम राही, गया—बिहार : होठों की सुर्खी और अखबारों की सुर्खी में क्या अन्तर है ?

उ० : एक से पता चलता है कि शायद इसके दिल में कुछ काला है और दूसरी से पता चलता है कि 'दाल में कुछ काला है।'

राजू महर्जन—नेपाल : 'बुद्धिमान' मनुष्य की क्या पहचान है ?

उ० : क्या उत्तर दें आपके प्रश्न का। इसे पढ़कर तो संसार को हर 'बुद्धू महान' यह समझेगा कि आप उसी की पहचान पूछ रहे हैं।

वीर शंकर पमनानी—मधुबनी : पहेली भेजूं तो प्रकाशित करेंगे।

उ० : पसन्द आई तो अवश्य प्रकाशित करेंगे।

नरिन्द्र कुमार निन्दी—बावेयाँ : बेशर्म के लिए चुल्लू भर पानी काफी होता है, तो इज्जतदार के लिए ?

उ० : कभी मौका मिले तो हमें समुद्र में धक्का देकर देख लीजिए।

अरुण कुमार त्रिपाठी—बोकारो स्टीलसिटी : क्या मैं एक बार में पांच-छः प्रश्न भेज सकता हूं ?

उ० : अवश्य, पर प्रकाशित एक ही सबसे अच्छा प्रश्न होगा।

आलोक जेतली—कानपुर : दीवाना एक ही दिन में पढ़ लेते हैं। बाकी छः दिन क्या करें ?

उ० : दीवाना की अच्छी बातें याद करके अपने मित्रों को बताते रहें। जैसे भैंस एक घन्टा अपना चारा खाती है और छः घन्टे 'जुगाली' करती रहती है।

विनय भाणावत 'मीन'—उदयपुर : चाचा जी जन्म-मरण भगवान के हाथ में है। अगर आपके हाथ में हो तो आप क्या करते ?

उ० : वही करते जो इस भगवान ने किया है। पिछली सरकार ने जो किया वह भगवान करे तो जनता उसे भी उठा कर फेंक दे, यह सोचे बिना कि उसने अच्छा किया या बुरा किया।

विजय चाँद गोठिया—श्रीगंगानगर : चिल्ली की उम्र क्या है ?

उ० : अभी इसके दो दूध के दांत आए हैं।

बद्री प्रसाद वर्मा अन्जान—गोलाबाजार : दीवाना में आप कवितायें प्रकाशित क्यों नहीं करते ?

उ० : इस कमी को काका हाथरसी पूरा कर देते हैं। इसे कहते हैं, हाथी के पांव में सब का पांव।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मन्डला : चाचाजी, भारत में आजकल कौन-सी बीमारी लगी हुयी है ?

उ० : एक दूसरे के गिरेबान में झांकने की, और दूसरों की टांग खींचने की।

लता कुमारी—दिल्ली : कृपया फिल्म अभिनेत्री नीतू सिंह का पता बताइये।

उ० : नीतू सिंह, ११ वां माला, रुबरवन क्वीन, पाली हिल, बांदरा, बम्बई-४०००५०।

संजीव चड्ढा—दिल्ली : मैं चौदह साल का हूं, पर दाढ़ी-मूंछ इतनी आ गयी हैं जैसे मेरी उम्र बीस साल हो। स्कूल में लड़के मुझ पर हंसते हैं, बताइए मैं क्या करूं ?

उ० : आपके बाल हैं, लोग इसलिए हंसते हैं। हमारे सर पर बाल नहीं हैं, लोग इसलिए हम पर हंसते हैं। हमारी तरह आप इतना ही कर सकते कि हंसने वालों से एक-एक रुपया मनोरंजन टैक्स मांग लें।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फिल्म वालों का
गणतंत्र दिवस वीरता पुरस्कार

गणतंत्र दिवस पर साहसिक कार्यों के लिए नागरिकों को पुरस्कार दिये जाते हैं । इस वर्ष कुछ फिल्मी हस्तियों को यह पुरस्कार दिए जाने की हम राष्ट्रपति से सिफारिश कर रहे हैं ।

अमिताभ बच्चन को

रेखा और परवीन बॉबी से रोमांस लड़ा कर जया भादुड़ी को ईर्ष्या की आग में जलाने के लिये **फायर सर्विस मैडल ।**

विद्या सिन्हा को

शुक्ला मैमोरियल एवार्ड ।

प्रेमनाथ को

सेट पर अभद्र व्यवहार के लिए अति **अशिष्ट सेवा मैडल ।**

परवीन बॉबी को

(क)वीर चक्र ।

हेमा को

शादी से बचे रहने के लिये अविवाहित
जीवन आनन्द पदक ।

कामिनी कौशल को

प्रेमनाथ की लम्बी सेवा के लिये
विशिष्ट सेवा मैडल ।

रेखा को

निर्माताओं को चक्कर में डाले रखने
के करतब के लिये **वीरचक्र पै चक्र ।**

धर्मेन्द्र को

एक बूढ़े पत्रकार और महिला पत्रकार
की पिटाई के लिये ।
अधरमवीर चक्र

नीतू सिंह को

ऋषि कपूर का पीछा उसके घर वालों
की फटकार के बावजूद न छोड़ने के
लिए–**साहसिक कार्य प्रमाण-पत्र ।**

शशि कपूर को

शशि कपूर भुस के भाव फिल्में साइन-
करता जा रहा है । अतः शशि को
पदक भूषण ।

धारावाहिक उपन्यास

खौफनाक आवाजें

लेखक :— कैप्टन युद्धवीर

भाग-७
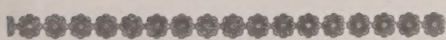
सेठ रघुनन्दन की कार क्लब से चुरा कर एक युवक उनके बंगले से सेठानी और दो बेटियों को यह कह कर ले गया कि सेठ जी उन्हें हास्पिटल में बुला रहे हैं। वीराने में उन्हें लूट कर युवक चलता बना। सेठ जी बंगले में लौटे तो उनकी नौकरानी और नौकर बंधे पड़े थे; अलमारी में लाश लटक रही थी। पुलिस ने उन पर शक किया तो सेठ जी ने जासूस बलजीत की शरण ली। लाश केवलकृष्ण की थी जो सोमा का प्रेमी था। सोमा का दूसरा प्रेमी अखबार में केवलकृष्ण के बारे में खबर पढ़ कर बलजीत को यह बता गया कि लाश के साथ जो सूटकेस पाया गया था, वह उसके फ्लैट से चुराया गया था। इस बीच किसी ने सोमा को भी मार डाला। तभी एक लाश उजाड़ जगह में पाई गई। उसकी बहन सरस्वती को खबर मिली तो वह दुश्मनों का सफाया करने घर से निकली; मगर बेचारी खुद मारी गई। बलजीत की दौड़धूप से एक ऐसी कब्र का भेद खुला, जिसका नक्शा सरस्वती के फ्लैट में उसे मिला था।

अब उसने सरस्वती और कैलाश की तलाशी लेनी शुरू की। उसे कोई भी मतलब की चीज हाथ न लगी। एक रुमाल में कोई धार्मिक पुस्तक बंधी हुई थी। रूमाल खोला तो वह रामायण निकली। बाकी जनाना कपड़े थे। बलजीत समझ गया कि वह सरस्वती का ट्रंक था। रामायण के पन्ने उंगलियों में दाब-क[illegible] उसने 'फुरेरी' के ढंग से पलटे तो एक फोटो उछलकर बाहर गिर पड़ी।

फोटो उठाकर बलजीत ने देखी तो हैरत में उसकी आंखें फटी-की-फटी रह गईं। ऐसा जान पड़ता था कि वह देहाती परिवार की फोटो थी। उसमें दो देहाती मर्द इस तरह बैठे थे कि उनके दर्म्यान दो औरतें थीं और उनके कदमों में पांच बच्चे थे। मर्दों ने पगड़ियां बांध रखी थीं। बच्चों में तीन लड़के थे और दो लड़कियां थीं। किसी भी बच्चे की आयु पांच-छह वर्ष से ज्यादा नहीं थी।

बलजीत को हैरत इस बात पर हुई थी कि एक देहाती मर्द की शक्ल देहाती लिबास के बावजूद सेठ रघुनन्दन से मिलती-जुलती थी। फोटो में उसकी उम्र तीस-बत्तीस साल के आसपास मालूम हो रही थी।

वह फोटो भी बलजीत ने अपनी जेब में रख ली। उसका तलाशी लेना निरर्थक नहीं गया था। फ्लैट से बाहर निकल कर उसने दरवाजे को ताला लगाया और कार में बैठ कर सेठ रघुनन्दन के बंगले को चल दिया।

अनिला जब टैक्सी में सरस्वती की टैक्सी का पीछा कर रही थी तो वह पूरी तरह चौकस थी। बैठे-बैठे दायें-बायें और आगे-पीछे भी देखे जा रही थी। पिछली सीट पर अपने पास उसने हैंडबैग खोल कर रखा हुआ था। हैंडबैग में उसका रिवाल्वर था।

सरस्वती की टैक्सी एन० एम० रोड की तरफ मुड़ी तो अनिला ने देखा कि वहां सड़क के किनारे पहले से एक टैक्सी खड़ी थी। अनिला की टैक्सी उस टैक्सी के सामने से गुजरी तो खड़ी टैक्सी की पिछली सीट पर बैठा कोई आदमी जल्दी से झुक गया।

अनिला का माथा ठनका। खड़ी टैक्सी की पिछली सीट पर जो कोई भी बैठा था, उसने उससे छिपने की कोशिश की थी। अनिला की टैक्सी अपनी रफ्तार में निकल आई थी, इस कारण खड़ी टैक्सी में छिपने वाला मर्द था या औरत, यह अनिला न जान सकी।

अनिला ने मुड़ कर देखा।

पीछे खड़ी टैक्सी भी हरकत में आ चुकी थी। वह अनिला की टैक्सी का पीछा करने लगी थी।

अनिला ने हैंडबैग में से रिवाल्वर निकाला और हाथ में ले लिया। पीछे वाली टैक्सी फर्राटे भरती चली आ रही थी। कुछ मिनट में ही वह अनिला की टैक्सी के पास से निकल गई। अनिला इस बार भी उस टैक्सी को पिछली सीट पर बैठे आदमी को न देख सकी। जो कोई भी उस टैक्सी में था, अपनी सीट पर लेट गया था।

अनिला सोचने लगी कि उस टैक्सी में बैठा आदमी उससे छिप क्यों रहा था?

वह टैक्सी अब सरस्वती की टैक्सी से भी आगे निकल गई थी।

अनिला सोचने लगी, क्या यह उसका वहम था कि कोई उसका या सरस्वती की टैक्सी का पीछा कर रहा था? अब वह टैक्सी आंखों से ओझल हो चुकी थी।

एन० एम० रोड जहां खत्म होती थी, वहां से वीरान और उजाड़ इलाका शुरू हो जाता था।

सरस्वती की टैक्सी मुड़ने ही को थी कि एक औरत न जाने कहां से सड़क-किनारे आ गई। उसने हाथ देकर लिफ्ट मांगी।

अनिला की टैक्सी सरस्वती की टैक्सी से एक फर्लांग पीछे थी।

सरस्वती की टैक्सी की रफ्तार कम होने के बाद रुक गई। लिफ्ट मांगने वाली औरत सरस्वती के साथ बैठ गई।

अनिला ने उस औरत को अच्छी तरह देख लिया था। उसने छोटी कमीज और बेल-बॉटम पेंट पहन रखी थी। चेहरे-मोहरे से वह सुन्दर थी। उसके हाथ में मगरमच्छ की खाल का हैंडबैग था।

सरस्वती की टैक्सी रुक जाने से अनिला को भी अपनी टैक्सी रुकवानी पड़ गई थी।

जब सरस्वती की टैक्सी चल पड़ी तो अनिला ने भी अपने ड्राइवर को अगली टैक्सी का पीछा करने का हुक्म दिया।

सरस्वती की टैक्सी क्लायड रोड पर पहुंच कर रुक गई।

अनिला ने भी अपनी टैक्सी रुकवा दी।

अगली टैक्सी में से वह औरत निकली जिसने लिफ्ट मांगी थी। सरस्वती की टैक्सी सड़क के किनारे रुकी हुई थी। बैल-बॉटम वाली ने जाती हुई कार से लिफ्ट मांगी। कार रुकने पर वह उसमें सवार हो गई। अनिला ने उस कार का नम्बर नोट कर लिया—यू एल ४६६६।

डेढ़-दो मिनट बीत गए तो अनिला बड़े असमंजस में पड़ गई कि सरस्वती की टैक्सी चल क्यों नहीं रही थी? क्या वह अपनी टैक्सी आगे बढ़वा कर देखे कि माजरा क्या है?

पांच...छह...सात मिनट बीत गए। सरस्वती की टैक्सी हरकत में न आई।

अनिला की छठी रग फड़क उठी। उसने समझ लिया कि कोई भयानक नाटक हो चुका है। ड्राइवर को उसने टैक्सी आगे बढ़ाने का हुक्म दिया।

अभी उसकी टैक्सी स्टार्ट ही हुई थी कि अगली टैक्सी का ड्राइवर दोनों हाथों में सिर थामें बाहर निकला और चिल्लाने लगा, 'खू...न! खून! वह औरत खून करके निकल भागी!

जब तक अनिला की टैक्सी उस टैक्सी के पास पहुंचती, दो-तीन कारें रुक गईं। लोग जमा होते गए।

अनिला भी अपनी टैक्सी में से उतर कर भीड़ की ओर लपकी। लोग अगली टैक्सी में झांक रहे थे और ड्राइवर से सवाल कर रहे थे। भीड़ चीर कर अनिला ने भी अगली टैक्सी में झांका। सरस्वती की आंखें पथरा-सी गई थीं। वह पिछली सीट पर अध लेटी सी पड़ी थी। उसका सिर कोने में टिका हुआ था। उसकी बायीं बगल में से खून रिस रहा था। पैरों के पास चादर में लिपटा लम्बा-सा बक्सा पड़ा था।

अनिला समझ गई कि सरस्वती को गोली मारी गई थी। कातिल वही औरत थी जिसने उस टैक्सी में लिफ्ट मांगी थी। उसके पास सायलेंसर चढ़ा रिवाल्वर था। यही कारण था कि गोली चलने की आवाज सुनाई नहीं दी थी।

कुछ लोग पुलिस को सूचना देने दौड़ पड़े।

टैक्सी-ड्राइवर इतना बौखला चुका था कि बार-बार वही किस्सा दुहराए चला जा रहा था।

'वो कौन थी?' अनिला ने ड्राइवर से पूछा।

'बड़ी शरीफ औरत लगती थी। लिबास अच्छा था; शक्ल-सूरत अच्छी थी; टैक्सी में मुर्दा पड़ी बीबी जी को वह पहले से जानती थी। दोनों आपस में घुल-मिल कर बातें करती रही थीं। आखिर में मरने वाली ने उससे कहा था—लाजवंती! मेरे पास रायफल है और इसमें तीन गोलियां हैं। मैं उन तीनों को भून कर रख दूंगी। मुझे दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। तुम जानती ही हो कि मैंने कैसे-कैसे काम कर दिखाए हैं। बस, इससे आगे मैं कुछ नहीं सुन सका।'

'क्यों?'

'सामने से एक ट्रक आ रहा था और मेरा सारा ध्यान उसी तरफ लगा हुआ था। मेरे कानों में पट्ट की सी आवाज आई और चट से उस शरीफ लगने वाली लाजवंती ने टैक्सी रोकने को कहा। मैंने टैक्सी रोकी तो मेरे सिर पर उसने रिवाल्वर का दस्ता जोर से मारा। उसके बाद मुझे कुछ देर के लिए कोई होश न रहा।' टैक्सी-ड्राइवर ने कहा।

अनिला हैरत में डूबी खड़ी थी। उसने कल्पना भी नहीं की थी कि जिस टैक्सी का वह पीछा कर रही थी, उसमें कोई दुश्मन औरत इस आसानी से घुस आएगी और गोली मार कर साफ बच निकलेगी।

भीड़ बढ़ती जा रही थी।

अनिला ने अपनी टैक्सी में आकर ड्राइवर को आबादी में लौट चलने का हुक्म दिया।

एक दुकान में आकर उसने बलजीत को फोन किया। दूसरी तरफ से राजीव ने बताया, 'बलजीत बाबू यहां नहीं हैं। मैं खुद उन्हीं का इन्तजार कर रहा हूं। मुझे उन्हें आश्चर्यजनक रिपोर्ट देनी है। तुम उन्हें क्यों ढूंढ़ रही हो?'

'यहां क्लायड रोड पर एक औरत को टैक्सी में कत्ल कर दिया गया है।'

'किसे?'

'सरस्वती को, जिसका मैं पीछा कर रही थी। तुम चाहो तो चले आओ।'

'मैं आ रहा हूं।' यह कहने के साथ ही राजीव ने फोन सम्पर्क काट लिया।

सेठ रघुनन्दन के ड्राइंगरूम में उनके सामने बलजीत बैठा था। सेठ के हाथ में सरस्वती के ट्रंक में से मिली एक फोटो थी।

'बलजीत बाबू!' सेठ रघुनन्दन ने लम्बी सांस खींच कर कहा, 'यह फोटो लगभग बीस-इक्कीस साल पहले की है। तब मैं जिला बदायूं के गांव शहबाजपुर में रहा करता था।'

'आपके साथ दूसरा मर्द कौन है?' बलजीत ने पूछा।

'मेरा चचेरा भाई। हमारे साथ हम दोनों के परिवार हैं।' सेठ रघुनन्दन ने एक बालिका के चेहरे पर उंगली रखते हुए कहा, 'यह सरस्वती है, मेरे चचेरे भाई की इकलौती बेटी। फोटो खींचने के वक्त यह छह-सात साल की थी। उससे एक साल बाद मेरे चचेरे भाई बीमार पड़ गए। उन्होंने अपनी पत्नी और सरस्वती बेटी की परवरिश के लिए अपनी सारी जायदाद मेरे नाम कर दी।'

'आपके चचेरे भाई कहां हैं ?'

'स्वर्ग में। बीमार पड़ने के बाद वह जल्द ही दम तोड़ गए थे। उनके बारे में मशहूर था कि उनके पास काफी दौलत और सोना है। उन दिनों बदायूं में डाके बहुत पड़ते थे। मेरे चचेरे भाई की मौत के चार दिन बाद ही उनके घर पर डाका पड़ा। डाकुओं को मालूम ही न था कि हम लोग पहले ही रुपया और जेवरात बैंक-लॉकर में जमा करवा आए थे। डाकुओं को बहुत थोड़ा माल मिला था, इसलिए जाते-जाते उन्होंने मेरी भाभी की हत्या कर डाली और सरस्वती को उठा कर ले गए।'

'वह किस डाकू का गिरोह था ?' बलजीत ने पूछा।

'डाकू बालनाथ का। आज सरस्वती की खबर मुझे बीस-इक्कीस साल बाद मिली। आपका कहना है कि वह अपने भाई कैलाशनाथ के साथ रह रही है। यह झूठ है। सरस्वती का कोई भाई नहीं था।'

'खैर, आप आगे की बात सुनाइये।'

सेठ रघुनन्दन ने फिर लम्बी सांस खींची, 'मैंने उन दिनों की डकैतियों से बचने के लिए गांव छोड़ कर शहर में आ बसने का फैसला किया। मेरे पास थोड़ा निजी रुपया था और चचेरे भाई का बहुत-सा रुपया जेवरात भी था। मैं कोई भी कारोबार कर सकता था और इत्मीनान से सरस्वती की तलाश जारी रख सकता था। यह काम मैंने दो रिटायर्ड पुलिस अधिकारियों को सौंप दिया।'

'तब भी सरस्वती तो आपको मिली नहीं होगी ?'

'नहीं। बलजीत बाबू, आज आपने इतनी अच्छी खबर देकर मेरा दिल खुश कर दिया है। मैं उससे मिलना चाहता हूं। उसका रुपया मैं उसके हवाले कर देना चाहता हूं।'

'सरस्वती टैक्सी में कहीं गई है। आप दो घंटे बाद मुझे मेरे होटल में फोन कीजियेगा। तब मैं आपको सरस्वती के पास ले चलने का प्रोग्राम बनाऊंगा। मैंने अनिला को सरस्वती का पीछा करने भेज रखा है।'

'ठीक है, मैं दो घंटे बाद आपको फोन करूंगा। न जाने इन इक्कीस वर्षों में सरस्वती बेटी ने कैसे-कैसे दुःख झेले होंगे!' सेठ जी बोले।

बलजीत उठ कर खड़ा हो गया।

तभी टेलीफोन की घंटी बजने लगी।

सेठ जी ने रिसीवर उठा कर कहा, 'हलो!...ओह, तुम!...हां, बलजीत बाबू मेरे पास ही है।' रुको, मैं उन्हें फोन देता हूं।' सेठ जी ने रिसीवर बलजीत की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'अनिला आपसे बात करना चाहती है।'

बलजीत ने रिसीवर लेकर पूछा, 'कहो अनिला!'

'मैं इस वक्त क्लायड रोड से बोल रही हूं, बलजीत बाबू! सरस्वती की टैक्सी में किसी औरत ने लिफ्ट ली थी। वह उसे गोली मार कर मेरे देखते-देखते दूसरी कार में लिफ्ट लेकर चम्पत हो गई।'

'सरस्वती को गोली मार कर फरार हो गई?'

'हां?'

सेठ ने सुना तो उसके चेहरे पर गहरे रंज की छाया घिर आई।

अनिला ने फोन पर सारा किस्सा सुना दिया। बलजीत बोला, 'तुम वहीं रुको, मैं आ रहा हूं।'

अनिला की आवाज आई, 'राजीव भी प्रोफेसर के यहां से आ गया है। वह कोई आश्चर्यजनक रिपोर्ट देना चाहता है। उसे भी मैंने यहीं अपने पास बुला लिया है।'

'ठीक है। मैं आता हूं।' यह कह कर बलजीत ने रिसीवर क्रैडल पर रख दिया। उसने सेठ की ओर चेहरा मोड़ कर कहा, 'आइये सेठ जी! आप अब जिन्दा सरस्वती से नहीं मिल सकेंगे। उसे गोली मार कर टैक्सी में ढेर कर दिया गया है।'

'मैं सुन चुका हूं। शायद सरस्वती बेटी से इस जिन्दगी में मिलना कुदरत को मंजूर नहीं था। भाग्य का खेल भी कैसा अनोखा रहा! सरस्वती को पिता को बीमारी दी; डाकुओं से मेरी भाभी को मरवाया; सरस्वती को भी कत्ल करा दिया। उनका रुपया लौटाने की हसरत भी मैं पूरी न कर सका।' यह कह कर सेठ रघुनन्दन उठे और बलजीत के पीछे-पीछे चल पड़े।

क्लायड रोड पर लोगों की भीड़ बढ़ गई थी। इन्स्पेक्टर शर्मा अपनी पुलिस-टोली के साथ पहुंच चुका था। अनिला ने बलजीत को फोन करने के बाद इन्स्पेक्टर शर्मा को भी फोन पर सारा किस्सा सुना दिया था।

राजीव उस समय सरस्वती की टैक्सी के ड्राइवर से कुछ और जानकारी लेने की कोशिश कर रहा था।

सेठ रघुनन्दन और बलजीत भी आ पहुंचे। उन्होंने सरस्वती की लाश देखी।

'आयु बढ़ने के साथ आदमी की सूरत में भी कुछ तब्दीलियां आ जाती हैं।' सेठ रघुनन्दन ने कहा, 'इसके बावजूद सरस्वती की सूरत नहीं बदली। यह बिल्कुल वैसी ही है, जैसी छह-सात साल की उम्र में थी।'

इन्स्पेक्टर शर्मा ने उनके पास आकर कहा, 'अनिला की बात सुन कर मैं तो हैरान ही रह गया। मुजरिमों की साथी औरत ने सरस्वती को जिस तरह गोली मारी और भाग निकली, यह उनकी दिलेरी का सबूत है। सबसे ज्यादा हैरानी इस बात की है कि सरस्वती के क्लायड रोड आने का उस औरत को पहले से कैसे पता चल गया?'

बलजीत ने मुस्करा कर कहा, इसमें हैरत की कोई बात नहीं। सरस्वती जब अपने फ्लैट से बाहर आई थी तो हमारी तरह दुश्मनों का कोई आदमी भी वहां आस-पास मौजूद था। सरस्वती की चादर में लम्बा-सा बक्सा देख कर वह समझ गया था कि सरस्वती कहां जाएगी। उसने अपने ठिकाने पर सूचना दे दी होगी। उसी वक्त कातिल औरत ने सरस्वती को खत्म कर देने के लिए कदम उठा लिया।'

'ओह! तो यह बात है!' इन्स्पेक्टर ने बात समझने के अन्दाज में कहा।

बलजीत वहां से राजीव के पास चला आया जहां वह टैक्सी ड्राइवर से बातें कर रहा था।

ड्राइवर ने बलजीत को देखा तो चुप हो गया। वह उसके शानदार व्यक्तित्व में खो गया था।

'कहो राजीव, तुम क्या आश्चर्यजनक रिपोर्ट लाए हो?' बलजीत ने पूछा।

'यहां से होटल चलेंगे तो तसल्ली से बताऊंगा।' राजीव ने कहा।

बलजीत ने टैक्सी ड्राइवर से पूछताछ शुरू कर दी। जब उसने कुरेद-कुरेद कर सारी बात सुन ली तो मुस्कराने लगा। इन्स्पेक्टर शर्मा के पास लौट कर बलजीत ने कहा, 'इन्स्पेक्टर साहब! मैंने सरस्वती की हत्या का कारण समझ लिया है।'

'कैसे?'

'कातिल औरत और सरस्वती के दर्म्यान हुई बातचीत का ड्राइवर ने जो बयान दिया है, उससे यही मालूम होता है कि कैलाशनाथ की हत्या की खबर सुनते ही सरस्वती को आग लग गई थी। उसने तय

शेष पृष्ठ ४० पर
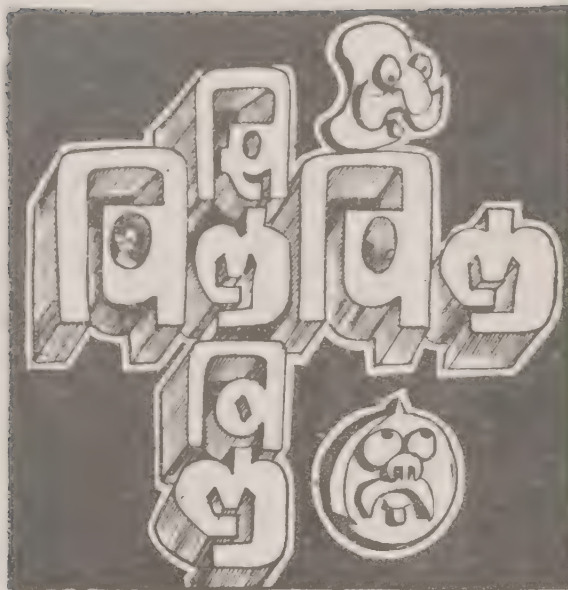
माई जी. टेस्ट मैचों के चक्कर में हम यह तो भूल गिये कि २६ जनवरी आने वाली है।
मैं तो अपने गाम वालों से बात कर रिया था। सब रिश्तेदार परेड देखने दिल्ली आयेंगे।
तो क्या हुआ? हमें सलामी लेने थोड़े ही जाना है. यह काम तो राष्ट्रपति संजीव रेड्डी करेंगे। हां अगर गौरमींट ज्यादा ही जोर देगी तो क्या, हम जाकर सलामी ले लेंगे।

सारी फौज म्हारे यहां ही आकर ठहरेगी। फूफा राम लखन अपने सारे टब्बर को लेकर आयेगा। अपने साथ बकरी भी ले आयेगा, वह सिर्फ बकरी का दूध पीता है। हमारे पार्शियन कार्पेट पर जब वह मिंगनियां करेगी तो कार्पेट की क्या हालत होगी?
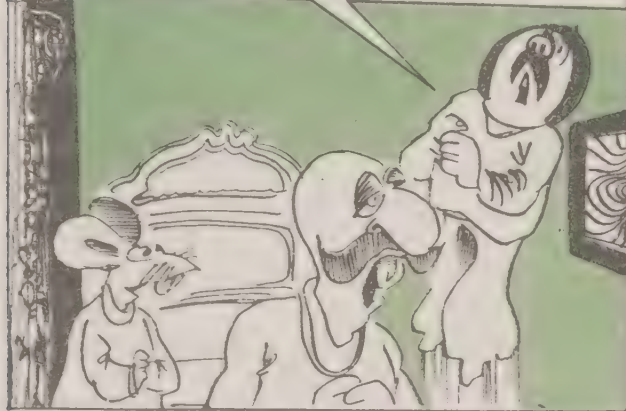
फूफा हुक्का पीकर हमारे डनलोपिल्लो सोफा सेटों पर राख और अगारे गिरायेगा। फूफी अपनी सातों लड़कियों को लेकर आयेगी, उनके साथ ससुरालों का पूरा कुनबा होगा। उनकी बीड़ियों से हमारे घर की क्या हालत होगी? उनके बच्चे गंदे हाथों से हमारे एंटीकों पर मैल की दो इंच मोटी इमल्शन पालिश कर देंगे। फूफी पान की पीक थूक-थूक कर दीवारों पर जो चित्रकारी करेगी, उसका ख्याल कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

धींगड़ू राम का लड़का फूलचन्द आज सुबह ही गाम से आया है। उससे जाकर गाम के समाचारों का पता लगाऊंगा, साथ ही पता लग जायेगा कि गाम से २६ जनवरी की परेड देखने कौन-कौन आ रिया है?

समाचार
दर्शन
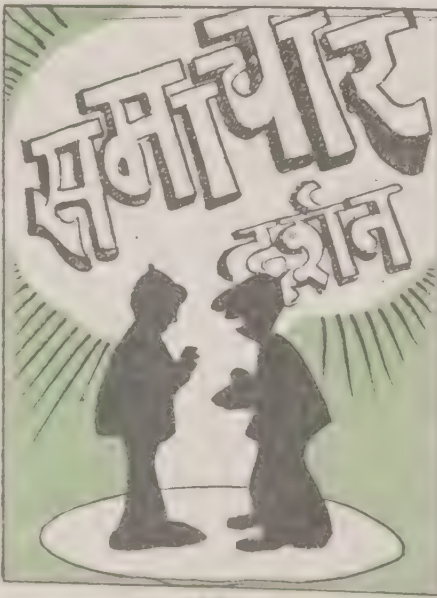
बड़ी बुरी खबर है। पिलपिल सुनेगा तो उसकी गंजी खोपड़ी पर जो एक बाल बचा है वह ट्रांजिस्टर के एरियल की तरह सीधा खड़ा हो जायेगा।

भाई जी, गाम से हमारे रिश्तेदारों की फौजों के कई बख्तेर बंद डिवीजन चल पड़े हैं हमारे पास आने के लिए। फूलचंद ने बताया कि फौजों के कॉलम के कॉलम क्विक मार्च करते हुये आ रहे हैं। ऐसे लगता है जैसे हिटलर के पैंजर डिवीजन बेल्जियम की ओर चल पड़े हों। उनके साथ-साथ गांव से हजारों मक्खियां भी चल पड़ी हैं जैसे जर्मनी हवाई फौज लुफ्त वाफ के स्टूका बॉम्बर बैटल आफ ब्रिटेनियां के लिये चल पड़े हों। मुफ्त की डबल रोटी और मक्खन पर हमला करने के लिये रिश्तेदार पचनोल की हजारों गोलियों के कारतूस कमर में बांध कर चले हैं।
अब क्या किया जाये ?

हमारा यह इम्पोर्टेड शैन्डलर काकी रामदेई के बच्चे गुलेल मार कर तोड़ देंगे। साथ ही हमारा दिल टूट जायेगा।
और हमारे इस फिलिप्स स्टीरियो सिस्टम का क्या होगा? हमने इसे बड़े अरमानों से हाल में ही कितने प्यार से खरीदा था कि हाई फ्रीक्वेंसी माड्यूलेटिड स्टीरियो फोनिक डायमंड ऑफ साऊंड का संगीत सुनेंगे। चाची फुलवा के बच्चे इसके बटन मरोड़-मरोड़ कर सत्यानाश कर देंगे। स्पीकर को उधेड़ कर वह चूहों के लिए फाइव स्टार होटल बनायेंगे। जब यह बातें दिमाग में आती हैं तो मेरा कलेजा फुदक कर मुँह को आ जाता है। गला रुंध जाता है।
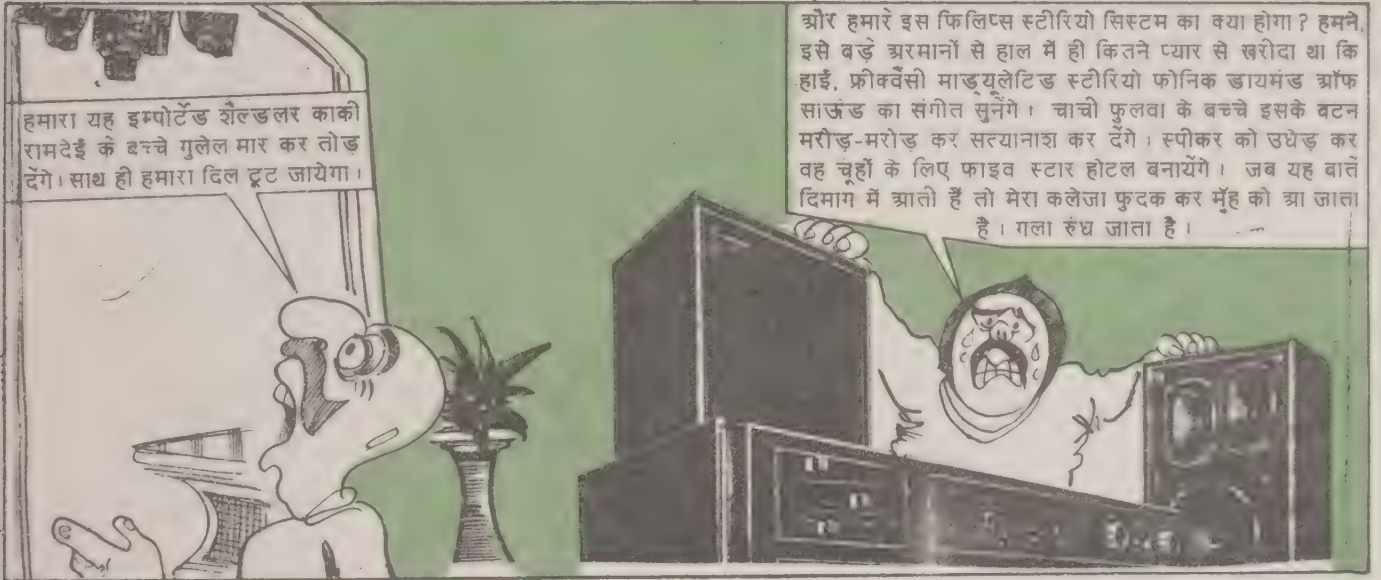
हमने कितने अरमान से छत पर धूप सेकने के लिये यह साज-सामान जुटाया था। इन सबकी जलेबी बनने वाली है।
और यह हमारा प्यारा बेडरूम! हमारे बेड पर धींगड़राम एंड कम्पनी गंदे पांव के साथ जाकर बैठ जायेंगे और बीड़ियां फूंकते हुये कोटपीस ताश खेलेंगे। बीड़ी से चद्दरों और गद्दों में सैंकड़ों छेद हो जायेंगे। चद्दरों का डिजाइन बदल जायेगा।

ओर यह हमारा ड्राइंग रूम ! कितने शौक से इसे सजाया था हमने। अब इसका सत्यानाश होगा। लोग सोफों पर पालथी मार कर बैठेंगे। बच्चे नाक साफ करके हाथ सोफों पर पोछेंगे।
कार्पेट को गंदे पैरों और गंदे जूतों से बेदर्दी से रौंदा जायेगा। हमारे कट-गलास ऐशट्रे को फूफा पीकदान समझ कर तम्बाकू वाले थूक से भरपूर सम्पन्न कर देगा। फ्लावर केस से औरतें फूल नोच कर बालों में लगायेंगी।
हमारे महंगे वॉल पेन्टिग्स पर गंदे हाथ फेर-फेरकर नई ही चित्रकारी की जायेगी। हमारे चाइनीज क्राकरी सेट और डिनर सेट भगवान को प्यारे हो जायेंगे। उनके अवशेष ही रह जायेंगे पीछे। २६ जनवरी के बाद घर में बीड़ी के टोटों का जमघट फर्श पर घुटनों-घुटनों तक होगा। हुक्के के धुयें से छत और दीवारें धुंधली हो जायेंगी।
हमारे घर जो होने वाला है उसके सामने एमरजेंसी के अत्याचार भी फीके पड़ जायेंगे।

मुझसे यह नजारा नहीं देखा जायेगा, नहीं देखा जायेगा। मैं पहले ही चिर निद्रा में सोने के लिये अपनी कमल जैसी आंखें बन्द कर लेना चाहता हूं।
मुझसे यह सहन नहीं होगा। कोई दाता मुझे कटोरा भर वही चीज दे दो जो सकुरात को दिया गया था। अगर याद नहीं आता कि सुकरात को क्या दिया गया था तो हिस्ट्री की किताब खोल कर पढ़ो।
ठीक है फिर मैं भी डबल रोटी और मक्खन जादा खाकर मर जाता हूं। मैं ही अकेला जी कर क्या करूंगा ? थारे बिना इस दुनिया में मेरा दिल नहीं लगेगा। हम एक ही ट्रेन से स्वर्ग जायेंगे।

ओ भाई, हमने इतने पेचीदे केस अपने तेज दिमाग का प्रयोग करके हल कर लिये हैं फिर हम इस समस्या का हल नहीं खोज सकते ? जरूर खोज सकते हैं।
भाई जी.. हम तो इतने घबरा गये थे कि याद ही नहीं रहा कि हम कौन हैं। हम ए-वन जासूस कम्पनी के विश्व प्रसिद्ध जासूस हैं।

सुनो, हम आज ही अपना जरूरी-जरूरी सामान पैक करके यहां से चल देते हैं। किसी होटल में या पास के दूसरे शहर में पांच छः दिन धर्मशाला में बिता आयेंगे। पड़ोसियों को बता देंगे कि हम एमसटरडम जा रहे हैं वहां दुनिया के चोटी के जासूस एक विश्व सम्मेलन कर रहे हैं। वहां हमारा जाना इतना ही जरूरी है जितना दूल्हे के लिये बारात में जाना—क्या समझे ? आई बात समझ में ?

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

आपके पत्र

गार्डन के किनारे दीवाना पढ़ते-पढ़ते जा रहा था कि अचानक बाग के किनारों पर लगे लोहे के जंगले में से एक सीढ़ीनुमा जंगला गायब मिला। अभी परसों ही तो नगर निगम ने बाग के किनारे नये जंगले लगाए थे पर आज इनमें से एक सीढ़ीनुमा जंगला गायब देखकर आश्चर्य हुआ। गार्डन में चला गया तो देखा कि एक सज्जन उस जंगले का उपयोग सीढ़ी के रूप में कर रहा था और आम के पेड़ पर से आम तोड़-तोड़कर थैले में भर रहा था। जब उसकी यह हरकत मेरे से नहीं देखी गयी तो मैंने उसे ललकारा और उस अजनबी ने मेरी तरफ देखा तो मैं यह देखकर हैरान हो गया कि वह अजनबी और कोई नहीं चिल्ली ही था, जो मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगा था। नीचे उतरकर चिल्ली ने मुझे रसीले आम खिलाये और गली नं० ५० में ले गया जहाँ दीवाना के कलाकारों से नए-रूप में मिला और भयानक खुशी हुई।

केवल भाई, लोकी भाई—काशीपुर

****

शाम को जब हम दोनों भाई रेलवे स्टेशन के बुक-स्टाल के पास से निकले तो हमें सीटी देने की आवाज सुनाई दी। पत्रिकाओं की तरफ देखा तो खुद पिलपिल साहब मुख पृष्ठ पर खड़े हैं और सीटी बजा-बजा कर दीवानों को बुलाकर नव वर्ष की बधाई दे रहे हैं। जब थोड़ा आगे गया तो चिल्ली साहब से रूम नं० २०६ में मुलाकात हुई। पुल पर पहुंचने पर पोंगा पण्डित जी से फिल्मी कलाकारों के बारे में भविष्यवाणी सुनी। घर पर वापस आये तो नये मेहमान बच्चा झमूरा से मुलाकात हुई और काफी नये कलाकारों व पुरानों से दिलचस्प भेंट हुई।

पुरुषोत्तम लाल प्रिंस व गुलशन चायवाला—दिल्ली

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

'दीवाना' का जब मुख पृष्ठ देखते ही मजा आ गया तो अन्दर पढ़ने के लिये जी लालायित हो गया। एक स्तम्भ की दूसरे स्तम्भ से तुलना करना लोहे के चने चबाना जैसा हो गया। अगले अंक का बेसब्री से इन्तजार है।

संजय कुमार गुप्ता—तपकरा

****

दीवाना का ५० वां अंक मिला। मुख पृष्ठ देखते ही मेरा मनप्रसन्न हो गया। लेकिन अब आप मोटू-पतलू की तरह सिलबिल-पिलपिल को भी रंगीन कर दें तो अच्छा रहेगा। 'जब हम होंगे ८०-६० साल के' चित्र देख कर ही आश्चर्य चकित रह गये। इसके अलावा छुट्टन और मिट्ठन का चिड़ियाघर पढ़ कर भी आनन्द आ गया।

मनोज कुमार नेमा—मंडला

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दीवाना का अंक प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को भीख मांगते देख कर रोने को मन हुआ किन्तु बुकस्टाल पर अन्य लोगों की उपस्थिति महसूस कर सिर्फ मन मसोसकर ही रह जाना पड़ा।

हर अंक की तरह इस अंक ने भी हमें बेहद हंसाया। इस अंक में 'मोटू-पतलू' और 'पिलपिल-सिलबिल' ने अपने मनो-रंजक कारनामों से हंसा-हंसा कर दीवाना बना दिया।' फिल्म-स्टारों के प्रतीक चिन्ह और दीवाना फिल्म पुरस्कार भी हास्य-व्यंग्य से भरपूर थे। 'काका के कारतूस' और 'आपस की बातें' स्तम्भ भी अपने करारे जवाबों द्वारा हमारा मनोरंजन कराते हैं।

अनिल कुमार 'अनल'—तपकरा

****

मैं दीवाना नियमित रूप से पढ़ता हूं यदि मुझे कभी कारणवश दीवाना पढ़ने को नहीं मिलता है तो मेरा मन जब तक परेशान रहता है जब तक मुझे दीवाना का अगला अंक प्राप्त नहीं हो जाता है। मेरी दृष्टि में दीवाना जैसी उच्चकोटि की पत्रिका शायद और ही कोई हो। क्योंकि दीवाना की चिपकियां, चिल्ली लीला आदि जैसे कार्टून किसी और पत्रिका में होना असम्भव ही नहीं, बल्कि कठिन भी है। मैं दीवाना की ओर से दीवाना प्रेमियों, लेखकों को नये वर्ष के लिए हार्दिक बधाई देता हूं।

मौ० जुबेर करीदी—बिलारी

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं। यह पत्रिका मुझे बहुत अच्छी लगती है। यह हास्य पत्रिकाओं में श्रेष्ठ पत्रिका है। दीवाना का अंक ५० मिला। मुखपृष्ठ देखकर चिल्ली पर बहुत हंसी आई। इस अंक में सिलबिल-पिलपिल, मदहोश और चिल्ली लीला अच्छे लगे और फैंटम का कोई जवाब नहीं। क्या कारण है कि मैंने कई स्तम्भ भेजे लेकिन आपने नहीं छापे? क्या 'काका के कारतूस' स्तम्भ में प्रश्न के साथ कूपन भेजना पड़ता है? हां, तो कौन सा कूपन भेजें? पूरा बताएं।

संदीप हैरीसन—आगरा

जो कूपन उसी पृष्ठ पर नीचे छपा होता है। —सं०

****

दीवाना का नया अंक ५१ पढ़ा। हर अंक की तरह इस अंक में भी सभी स्थाई स्तम्भ रोचक रहे। जनेश्वर मिश्र को 'प्रेम-पत्र' कोई विशेष महत्व का नहीं था। 'दीवाना फिल्म पुरस्कार' बेहद नये अन्दाज का था। कहानी 'चलते-चलाते' व 'इनाम का चक्कर' रोचक थीं, धारावाहिक जासूसी 'खौफनाक आवाज' प्रशंसनीय है।

रामजी दास बतरा 'कौशल'—केवल गंज रोहतक

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अनेकों विशेषतायें और कई खूबसूरत फीचर अपने में संजोये दीवाना का अंक नं० ५१ मिला। जनेश्वर मिश्र जी के नाम चिल्ली का प्रेम-पत्र रोचक तथा तथ्यपूर्ण लगा। 'फिल्म स्टारों के प्रतीक चिन्ह', 'दीवाना फिल्म पुरस्कार', 'क्या शह है नेता' आदि फीचर इस अंक के प्रमुख आकर्षण थे। नवोदित अभिनेत्री टीना मुनीम पर विजय भारद्वाज का लेख पसन्द आया।

हरदीप गुलाटी—पहाड़गंज

****

दीवाना का नूतन वर्ष का नूतन अंक नं० १ पढ़ा। मुखपृष्ठ पर चिल्ली को फुटबाल खिलाड़ी व डा० झटका को रेफरी के रूप में देखा तो मैं अपनी हंसी नहीं रोक सका।

दिल की धड़कन एक स्थान पर ठहराने वाली मोटू-पतलू की रहस्यमय कथा 'मौत का घण्टा' काफी अच्छी थी। ज्ञान के स्तम्भ, क्यों और कैसे व खेल-खेल में पसन्द आये। दीवाना फीचर 'पोंगा पंडित की भविष्यवाणी बहुत ही हंसाने लायक थी। पिलपिल-सिलबिल व चिल्ली-लीला भी अच्छी लगी।

डॉ० के० मटाई—इन्दौर

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दीवाना का नया अंक ५१ मिला। मुखपृष्ठ पर 'दिल खोलकर दान दीजिये' का सीन देखकर दिल खुश हुआ। मोटू-पतलू, छुट्टन-मिट्ठन, बन्द करो बकवास, पेन-फ्रेंड शिप क्लब में मैं बहुत रुचि रखता हूं।

रमेश खेतिया—हापुड़

घसीटा राम को
स्वर्ण परी का वरदान

दुनिया में थोड़ा बहुत धनवान तो सभी बनना चाहते हैं। पर घसीटा राम दी ग्रेट का जवाब नहीं, लाख धक्के खाने और सर फुड़वाने पर भी वह पारस पथरी तो इन्हें मिली नहीं जिसे लोहे के लगाओ तो वह सोना बन जाता है। पर एक ऐसी पुरानी किताब हाथ लग गई है, जिसमें बहुत-सी चीजों को मिला कर उनसे सोना बनाने के नुस्खे लिखे हुए हैं, जिस कबाड़ी से इन्होंने यह किताब खरीदी है उसने २२ कैरेट के सोने को २४ कैरेट का बनाने के लिए नुस्खे में कुछ चीजें अपनी ओर से भी लिख दी हैं। अब समझिये घसीटा राम जी के वारे-न्यारे हैं, वह किताब पढ़ रहे हैं और खुश हो रहे हैं, नुस्खे में लिखा है...

तांबा .... ४५% लोहा ५%
पारा .... ५% रांगा १०%
एलमोनियम .... ५% जस्त ५%
नमक .... २% गधक ३%
सच्चे मोती .... १% कांसी १०%
मोर के आंसू .... २% बुलबुल के पर २%
आशा भोंसले की हिचकी २%
किशोर की सिसकी १%
एमरजेंसी के हंगामे ५%
आयोग की कार्यवाई १.५%

इन सब चीजों को एक कुठाली में डाल कर आग पर रख दो।

हाँ, आग पर तप कर ही सच्चा सोना बनता है। बाबू जगजीवन राम के जन्म दिन पर भी यही कहा गया था, मैं बनाऊंगा सोना। यह सामान तो हर जगह मिल सकता है।

दूसरे ही पल उसने देखा, उसके सामने सुनहरे परों वाली एक परी थी।

तभी वहां चेलाराम आ गया ।

देखना जी, एक बिस्कुट खिलाओ तो एक गर्मागर्म खबर सुनाऊं तुम्हें ।

तू मुझे केक खिला चूहे, मुझसे गर्म खबर नहीं होगी तेरे पास ।
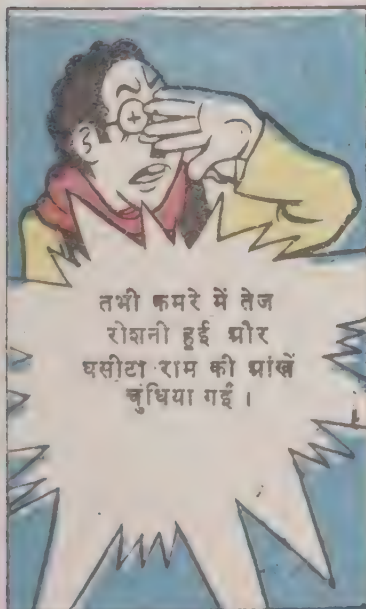
ब्रिटेनिया के बिस्कुट खाने की बात कर रहा था दांतों वाले चूहे ! अब मैं तेरे सोने के बिस्कुट बना कर बेचूंगा, पहले तू धेले का आदमी नहीं था डिटेक्टिव ७०७ । अब मैं साबुन नं० ५५५ की लाखों टिकियां खरीद सकता हूं तुझे बेचकर ।
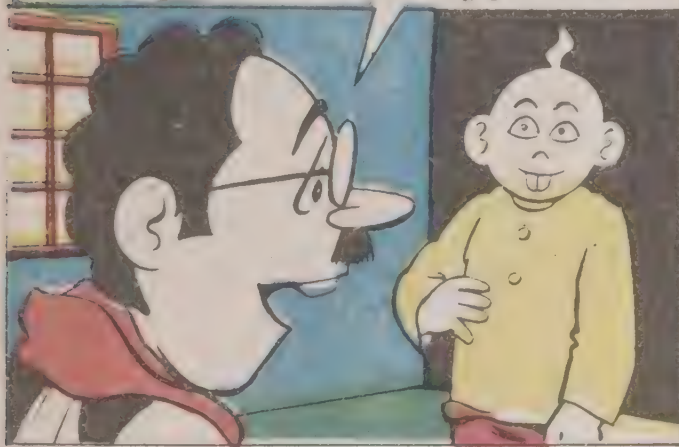
एक मजेदार खबर सुन घसीटा राम !
तू सुनेगा तो फड़क उठेगा ।
लो यह भी आ गये मुर्दे घाट से उठ कर ।

जैसे ही घसीटा राम ने मोटू-पतलू के हाथ लगाया, वे जहां थे वहां खड़े-खड़े ही सोने का बुत बन गये ।
सोना ही सोना, तेरे तो दिन फिर गये घसीटा राम !
अरे एक लच्छेदार खबर सुनाऊं तुम्हें ?

मलाई के लच्छे तुम्हें मैं खिलाऊंगा डाक्टर कब्रिस्तान । जरा मेरे गले लग जाओ, ऐसे । बहुत दिन तुमने लोगों की आंखों में नींबू का अचार डाला है ।

लो, अब फौज खड़ी हो गई इन झल्ली वालों की । मेरा घर अब अजायब घर है, जिसमें सभी मूर्तियां सोने की हैं । चाहो तो मेहरे दी हट्टी की कसौटी पर कस कर देख लो, माई डियर स्वर्ण परी तू ने कमाल कर दिया । लोग मेरे बीस साल के तजुर्बे को कहते थे, घसीटा राम बीस साल दिल्ली में रहा पर भाड़ झोंका अब भाड़ भी झोंकूंगा तो वह सोने का होगा । अब मैं संसार का सबसे धनी आदमी हूं, कोई धन्ना सेठ मुकाबला तो करके देखे मेरा ।

बचपन में जो कहानी पढ़ी थी वह भी कुछ ऐसी ही थी। उसमें सेठ की लडकी सोने की हो गई थी। पर मेरी तो कोई लडकी ही नहीं है, और यह जो सोने के बने हैं इनके लिये तो मैं रोज मरने की दुआएं मांगता था।

कुछ-कुछ भूख लगी है, पर अब वह किताब वाली बात सच नहीं होनी चाहिये। मैं इतना पागल नहीं हूं कि हाथ से रोटी खाऊं और वह सोने की हो जाए। मैं पांव से समोसे खाऊंगा।

मेज पर बैठते ही मेज सोने की हो गई? मजा आ रहा है मोतियों वाले घसीटा राम, तेरे वारे न्यारे हो गये।

समोसा पांव में लिया तो सोने का हो गया, यह क्या धांधली है। मैंने तो इसे हाथ से छुआ तक नहीं।

पर मैं खाऊंगा कैसे? मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

हाथ की बात छोड़ो, वरदान में तुमने मांगा था। जिस चीज को मैं बदन से छू दूं वह सोने की हो जाए, क्या तुम्हारे पांव तुम्हारे बदन का हिस्सा नहीं हैं?

यह तुम जानो।

अरे कोई समझाओ इस स्वर्ण परी को, मैं भूखा मर जाऊंगा।

चली गई स्वर्ण परी? कोई बात नहीं, मैं भी एक ही काइयां हूं। कहानी के उस सेठ की तरह बेवकूफ नहीं हूं, जिसने गर्म-गर्म आलू मुंह में डाला था तो सोने की गर्म-गर्म डली बन कर उसने सेठ का मुंह जला दिया था। मैं मेज को धक्का देकर गर्म-गर्म दूध का गिलास मेज पर गिराऊंगा, और दूध की धार को ऊपर से ऊपर ही लपक कर गटागट पी जाऊंगा।

ऐ... यह आई दूध की धार

अरे मैं मर गया, दूध की धार सोने का गर्म-गर्म डंडा बन गई मेरे मुंह में। मेरा मुंह जल गया, अरे मेरा मुर्दा उठ गया।

कहो घसीटा राम, जो मांगा वह मिला। संसार का सबसे धनी आदमी बन कर भी रो रहे हो?

मुझसे अपना वरदान वापस ले लो और मुझे पहले जैसा बना दो।
इसके लिये दो शर्तें हैं, एक तो तुम्हारे सभी मित्र पहले जैसे हो जायेंगे।
इनके एक दो सोने के हाथ भी काट कर नहीं दोगी मुझे
नहीं, दूसरी शर्त यह है कि आगे से जो कुछ तुम अपने लिये चाहोगे उससे दुगना तुम्हारे मित्रों को मिलेगा।
चलो यूं सही!
तो पीछे गर्दन घुमा कर देखो।

घसीटा राम ने गर्दन घुमा कर देखा तो मोटू-पतलू, डा० झटका और चेलाराम अपनी असली हालत में आ गये थे।
हम तुम्हें एक खबर सुनाने आए थे, नहीं सुनते तो हम जा रहे हैं।

मोटू-पतलू चल दिये और घसीटा राम ने गर्दन घुमा कर देखा तो स्वर्ण परी गायब थी।
वही पुरानी कहानी जैसा वरदान दे दिया परी ने। पर मेरा नाम भी घसीटा राम है, पहले दर्जे का काइयां हूं मैं। अभी मांगता हूं परी से वरदान।
हे परी! मेरी एक आंख फोड़ दे।

वाह! वरदान मांगते ही मेरी एक आंख फूट गई, इसका मतलब है मोटू-पतलू, चेलाराम और डाक्टर झटका की दोनों आंखें फूट गई होंगी!
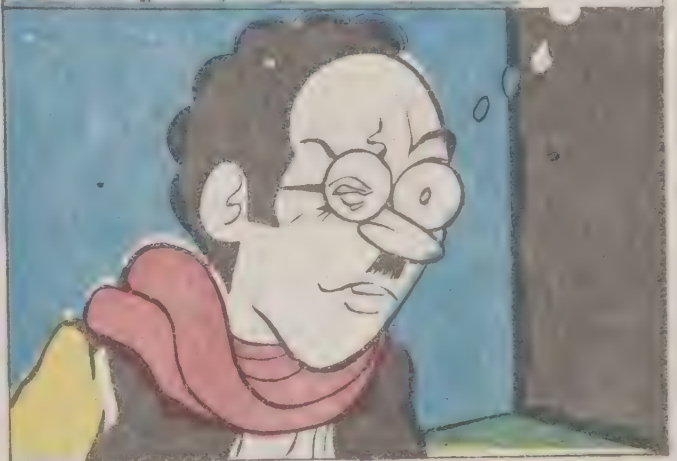
हे परी, मेरे घर के आगे एक कुंआ खोद दे।
मांग लिया वरदान, अब इन सबके घरों के आगे दो-दो कुयें खुद गये होंगे और यह दोनों आंखों के अंधे उनमें गिरेंगे। वाह वाह! मजा आ जाएगा, क्या याद करेगी परी भी।

पर दौड़ कर देखूं, यह अंधे हुये भी हैं या नहीं। कहीं मेरी ही एक आंख तो नहीं फूटी है?

आगामी अंक में अपने प्रिय जोकरों की दीवानगी फिर देखिये।

छुट्टन मिट्ठन और झमूरा

झमूरा वापस किनारे पर आया तो दोनों ने उसे घेर लिया।
जल सुन्दरी तुमसे मिलने आई थी।
हां, पर वह तुम्हें पूछ रही थी। कहती थी वे दोनों कहां हैं ? मैंने कहा किनारे पर।

अगले सप्ताह फिर एक नया हंगामा, एक नई दीवानगी।

क्रिकेट-क्रिकेट-क्रिकेट
कुछ रोचक आंकड़े

इन दिनों इंग्लैंड की क्रिकेट टीम पाकिस्तान का दौरा कर रही है। पाकिस्तान के प्रारम्भिक बल्लेबाज मुदास्सर नाजर ने विश्व क्रिकेट इतिहास में लाहौर में खेले गये प्रथम टेस्ट में एक विश्व रिकार्ड कायम किया, वह था सबसे धीमे शतक बनाने का। मुदास्सर ने कुल ५५८ मिनट में ११४ रन बनाये।

धीमे शतकों का रिकार्ड :—

१. मुदास्सर नाजर (पाकिस्तान विरुद्ध इंग्लैंड, लाहौर टैस्ट १९७७-७८) समय ५५५ मि०।
२. डी जे० मैक्गल्यू (द० अफ्रीका विरुद्ध आस्ट्रेलिया डरबन टैस्ट १९५७-५८ समय ५४५ मि०।
३. हनीफ मुहम्मद (पाकिस्तान विरुद्ध एम. सी. सी. १९५५-५६ लाहौर) समय ५२५ मि०।
४. पी. ई. रिचर्डसन (इंग्लैण्ड विरुद्ध द० अफ्रीका जोहन्सबर्ग १९५६-५७) समय ४८८ मि०।
५. हनीफ मुहम्मद (पाक० विरुद्ध भारत बहावलपुर १९५४-५५) समय ४६८ मि०।
६. हनीफ मुहम्मद (पाक विरुद्ध इंग्लैण्ड ढाका १९६१-६२) समय ४६० मि०।
७. फ्लैनग (इंग्लैण्ड विरुद्ध पाक ओवल १९३४) समय ४५७ मि०।
८. जे. डब्ल्यू गुये (न्यूजीलैंड विरुद्ध भारत हैदराबाद १९५५-५६) समय ४३५ मि०।
९. एम सी काऊड्रे (इंग्लैंड वि० वेस्ट इंडीज बिरमिंघम १९५७) समय ४३४ मि०।
१०. जे. एच. बी. वेट (द० अफ्रीका विरुद्ध आस्ट्रेलिया डरबन १९५७-५८) समय ४१४ मि०।

बाबी सिम्पसन का सौवां कैच

दिसम्बर १७, १९७७ को भारत-आस्ट्रेलिया के बीच पर्थ में खेले जा रहे टैस्ट में जब उन्होंने वेंकट राघवन का कैच लिया तो टैस्टों में सौ कैच पूरे करने का श्रेय प्राप्त किया। उससे पहले केवल चार

और क्रिकेटरों का यह श्रेय था। १०० कैच लेने वालों की सूची।

१. बॉबी सिम्पसन पर्थ ५४वां टैस्ट १००
२. ईयन चैपल मेलबोर्न ६९वां १०३
३. वैलीहेमंड मंचेस्टर ७९वां ११९
४. गैरी सोबर्स ट्रिनीडाड ८१वां ११०
५. कॉलिन काउड्रे क्राइस्टचर्च ८४वां १२०

चंदशेखर का और यह विश्व रिकार्ड

भगवद चंद्रशेखर ने मेलबोर्न में दोनों पारियों में आस्ट्रेलिया के छः-छः विकेट लेकर भारत को आस्ट्रेलिया की भूमि पर
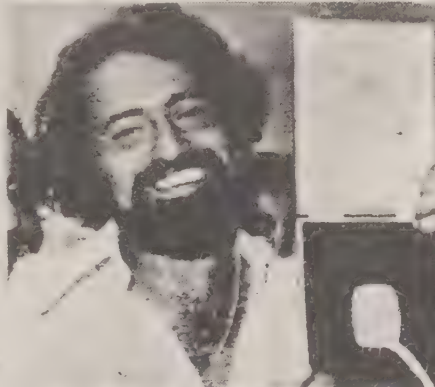
गोल्ड मैडल और गेंद लिये चन्द्रशेखर प्रसन्न मुद्रा में।

पहली विजय दिलाई। साथ ही उनके शिकार विकेटों की संख्या २०० को पार कर गई। परन्तु जिस विश्व रिकार्ड की हम बात करते रहे हैं वह रिकार्ड ऐसा है जो वह चाहते ना स्थापित न करते। लेकिन बस न चला। उनका विश्व रिकार्ड बैटिंग में है उन्होंने लगातार टैस्टों में बगैर कोई रन बनाये आठ शून्य अर्जित किये हैं। शायद सिडनी और एडलेड में भी उनका बस न चला तो यह रिकार्ड और भी बेहतर हो जायेगा। यानी और शून्य जुड़ जायेंगे।

क्या सुनील भी रिकार्ड स्थापित करेंगे

सुनील गावस्कर ने बम्बई (विरुद्ध इंग्लैंड १९७६-७७) ब्रिस्बेन, पर्थ और मेलबोर्न टैस्टों में लगातार शतक बनाये हैं मजे की बात यह है कि यह सारे शतक दूसरी पारियों में बने। क्या गावस्कर लगातार शतक बनाने अथवा लगातार दूसरी पारी में शतक बनाने का रिकार्ड स्थापित करेंगे ? देखते रहिये वैसे वह अब भारत में

सबसे अधिक शतक वाले बैटसमैन हो गये हैं—पॉली उम्रीगर के अब तक के १२ शतकों के भारतीय रिकार्ड से वह आगे हो गये। मेलबोर्न शतक के साथ उनका १३वां शतक हुआ।

गौतम सिंह बभ—बिहार

प्र० : शरीर को लचकदार बनाने के लिए कौन-सा व्यायाम करना चाहिए।

उ० : योगासन।

बैडमिंटन कैसे खेलें

जाली

जाली खेल के मैदान के बीच में मध्य रेखा के ठीक ऊपर बांधी जाती है। इसकी लम्बाई २० फुट से ज्यादा होती है ताकि कोर्ट में जाली ठीक तरह आ सके। इसकी चोड़ाई २ फुट ६ इंच होती है।

जाली के बीच जो छेद बने होते हैं। वे ¾ इंच के होते हैं। जाली अच्छी सुतली से बनाई जाती है तथा जाली के लम्बाई वाले किनारों पर लाल रंग के मोटे कपड़े की गोट लगी होती है। इस गोट के अन्दर से लम्बाई में दोनों ओर लम्बी डोरी पिरोई होती है। जिसकी सहायता से जाली को दोनों ओर चोड़ाई की तरफ लगे दो खम्भों से कसकर बांध दिया जाता है।

जाली के ऊपरी सिरे से जमीन तक की ऊंचाई ५ फुट मध्य से तथा किनारों पर ५ फुट १ इंच की ऊंचाई रखी जाती है।

शटल कार्क

शटल जिससे खेल खेला जाता है वजन में ७४ ग्रेन से लेकर ८५ ग्रेन तक की होती है। शटल के चारों ओर १४ से १६ पर (पंख) एक कार्क में गोलाई लिये हुए फंसे होते हैं। कार्क की ओर से इसकी गोलाई की परिधि कम होती है तथा परों की ओर क्रमशः परिधि बढ़ती चली जाती है। कार्क की लम्बाई लगभग २ सें० मी० होना चाहिये तथा परों की लम्बाई ७ सेंटी मीटर।

शटल में लगे पर सफेद होते हैं तथा उन परों को ऊपरी सिरे पर गोलाई लिए हुए काटा जाता है। परों के बाल एक दूसरे से अच्छी तरह चिपके होते हैं। यदि परों के बाल फैल जायें तो ऐसी शटल खेलने के काबिल नहीं होती।

रैकेट

बैडमिंटन का रैकेट पूरा लकड़ी (बेंत की तरह लचकदार लकड़ी) का होता है।

रैकेट का हत्था जो गोल तथा बीच से पतला होता है तथा नीचे की ओर पकड़ने की जगह पर गोलाई मोटी होती जाती है। हत्था १५ सें० मी० लम्बा होता है। तथा पतली राड २२ सें० मी० लम्बी।

इस प्रकार रेकेट अंडाकार गोलाई वाला भाग जो नायलान अथवा तांत के डोरे की चौकोर जालियों से बुना होता है। यह जाली खूब कसी हुई होनी चाहिये अन्यथा शटल पर वार ठीक प्रकार नहीं हो पाता। इस अंडाकार गोलाई की लम्बाई २२ सें० मी० ही होती है।

रैकेट खरीदते समय इन बातों का ख्याल रखना चाहिये कि उसकी तांत खूब कसी हुई हो। तथा रैकेट की फ्रेम बिलकुल सीधी हो।

रैकेट में लचक हो तथा वजन में ज्यादा भारी हो। पकड़ने की मूठ पर चमड़ा या अन्य कोई खुरदरा मोटा रबर चढ़ा हो अन्यथा रैकेट फिसलने का डर होता है।

खेल का प्रारंभ

सिंगल गेम में जिसे एक खेल कहा जाता है एक एक खिलाड़ी खेलता है।

दोनों प्रतिद्वंद्वियों के बीच एम्पायर टॉस करता है। जो खिलाड़ी टॉस जीतता है—उसे पहले सर्विस करने या कोर्ट चुनने का अधिकार होता है।

एम्पायर के निर्देश पर खेल शुरू होता है। सर्विस की सबसे पहले शुरूआत खिलाड़ी अपने कोर्ट के दायें भाग वाले भाग से करता है। विरोधी खिलाड़ी भी अपने कोर्ट के दायें भाग में तैयार खड़ा रहता है— इस तरह पहला खिलाड़ी शटल को अपने रैकेट से विरोधी कोर्ट में तिरछे कोर्ट में फेंकता है। इस समय पाइंट 'लव आल' यानी ०—० कहलाता है।

जो खिलाड़ी सर्विस करता है—विरोधी कोर्ट में शटल की कोर्ट में जमीन पर पाइंट अर्जित रहता है। यदि विरोधी उसके कोर्ट में शटल गिराने में कामयाब हो जाता है तो सर्विस आउट हो जाती है। तब फिर सर्विस करने की बारी विरोधी खिलाड़ी की होती है—और वह शटल को विभिन्न प्रकार से शॉट लगाकर अपने विरोधी के कोर्ट में गिराकर पाइंट बनाने की कोशिश करता है और दूसरा खिलाड़ी पहले खिलाड़ी के कोर्ट में शटल गिराकर सर्विस पुनः पाने की कोशिश करता है। क्योंकि जो सर्विस करने का अधिकार रखता है उसी का पाइंट बनता है।

मान लीजिये खिलाड़ी 'क' सर्विस कर के खेल शुरू करता है दायें कोर्ट से तथा खिलाड़ी 'ख' अपने दायें कोर्ट में खड़े होकर सर्विस द्वारा आयी हुई शटल को लौटाता है—उस समय पाइंट है 'लव आल' यानी दोनों का कोई पाइंट नहीं है।

दोनों खिलाड़ी शटल को अपने-अपने रैकेट द्वारा विभिन्न शॉटों का उपयोग कर एक-दूसरे के कोर्ट में इस तरह भिन्न-भिन्न जगहों पर फेंकते हैं ताकि दूसरा खिलाड़ी शटल से वापस करने में असमर्थ हो जाये और शटल उसके कोर्ट में गिर पड़े।

मान लीजिये खिलाड़ी 'क' शटल को 'ख' के कोर्ट में गिराने में सफल हो जाता है तो ऐसी स्थिति में पाइंट 'वन-लव' हो जायेगा। खिलाड़ी 'क' का पाइंट इसलिये बन गया कि सर्विस वही कर रहा था।

मान लीजिये यदि 'ख' शटल को 'क' के कोर्ट गिराने में सफल हो जाता तो तब खेल सर्विस चेंज होती यानी 'ख' को सर्विस करने का तथा पाइंट बनाने का अधिकार मिल जाता है।

इसका मतलब यह है कि सर्विस करने वाला खिलाड़ी तो पाइंट बनाने के चक्कर में रहता है—और दूसरा खिलाड़ी उसकी सर्विस तोड़ने तथा पाइंट न बनाने देने की कोशिश करता है।

अब एक पाइंट बन जाने पर खिलाड़ी 'क' पुनः सर्विस करता है—इस बार भी वह विरोधी के कोर्ट में शटल गिरा कर पाइंट बना लेता है तो पाइंट गिने जायेंगे—'टू—लव' यानी २—०

अब खिलाड़ी 'क' पुनः सर्विस करता है। इस बार 'ख' खिलाड़ी 'क' के कोर्ट में शटल गिराकर उसकी सर्विस भंग कर देता है।

ऐसी स्थिति में 'सर्विस चेंज' होती है। और पाइंट जो अभी तक 'टू—लव' यानी २—० बोले जा रहे थे अब साइड आउट होने पर 'लव—टू' यानी ०—२ बोले जायेंगे।

इसका मतलब है जो खिलाड़ी सर्विस करता है एम्पायर सर्विस चेंज होने के साथ-साथ स्कोर के नम्बर भी पलट देता है ताकि यह पता लगता रहे कि किस खिलाड़ी के कितने पाइंट बन चुके हैं।

क्रमशः

फैण्टम और जाल देवता
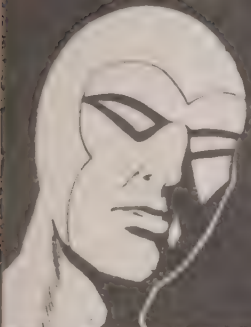
एक अजनबी आधी रात को जंगल के रास्ते पर...
!

वह गोली चलाने में देर कर देता है...

ओह !
धड़ाम
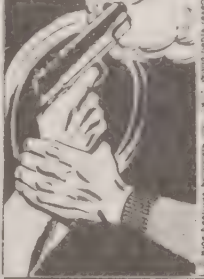
यह तो अपना होश ही खो बैठा...

ओह ! ओह !

मुझे मत मारो... बेशक मेरा पैसा और थैला ले लो...
मुझे तुम्हारे पैसे और जिन्दगी से कोई मत-लब नहीं, यह बताओ सफेद पाउडर कहां है ?
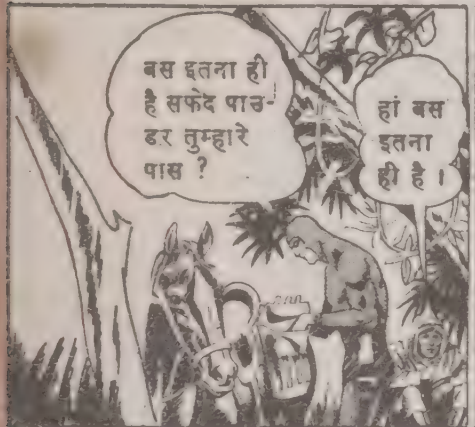
बस इतना ही है सफेद पाउ-डर तुम्हारे पास ?
हां बस इतना ही है ।

इसके सिवाय...
!

रुक जाओ इसके सहारे तो हमारा भविष्य है ।
यह लो ! यह तो कूड़े-करकट से भी बेकार है ! इसको सारा फेंक दूं फिर तुमसे बात करूंगा !
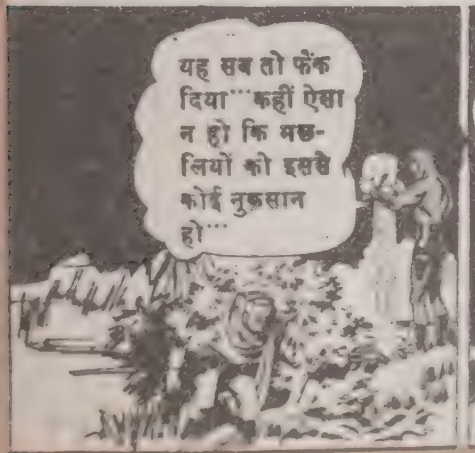
यह सब तो फेंक दिया... कहीं ऐसा न हो कि मछ-लियों को इससे कोई नुकसान हो...
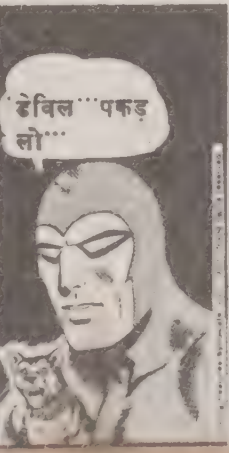
डेविल... पकड़ लो...

ओह !
यह भूखा भेड़िया है इस से पहले कि तुम इसका खाना बनो सीधी तरह मेरी बातों का जवाब दो !

गुमनाम है कोई ?

प्रतियोगिता 28

इनाम ३० रु०
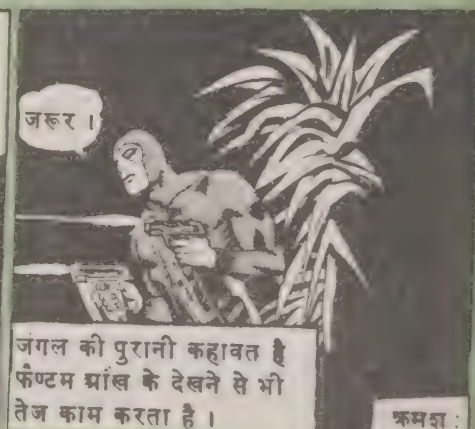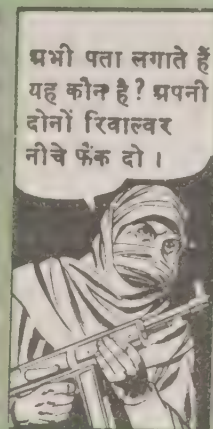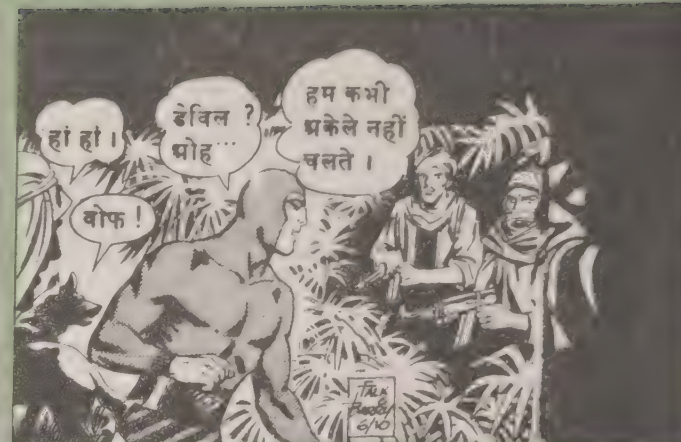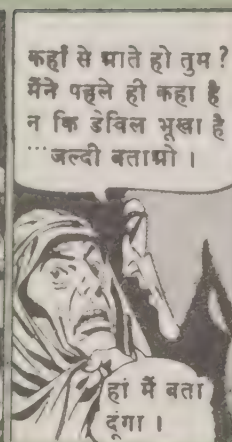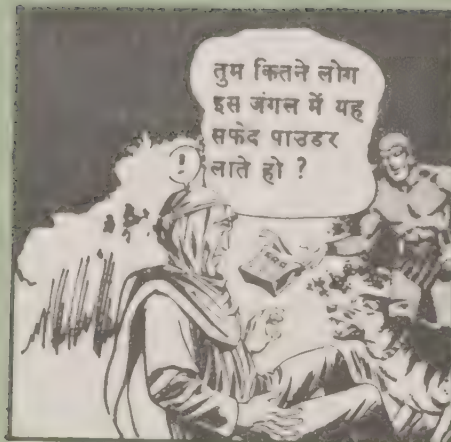
आपको यह बताना है कि रेखा के साथ किस कलाकार की तस्वीर है और क्या दीवानी बात कह रहा है ?

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें - गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ८ ब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-2 । हमारे कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि:— ११ फरवरी १९७८ - एक पोस्टकार्ड पर केवल एक ही हल भेजें ।

प्र० : टैलीग्राफीय संदेश संकेतों में किस प्रकार भेजे जाते हैं तथा इन्हें शब्दों में किस प्रकार बदला जाता है ?

मनोरंजन कुमार जैन—मण्डला

उ० : टैलीग्राफीय संदेश भेजने में मोर्सकोड का प्रयोग किया जाता है, ये एक बिन्दू तथा डैश की भाषा होती है। ये संकेत एक बहुत ही साधारण मशीन द्वारा भेजे जाते हैं। इस मशीन में सबसे महत्वपूर्ण मोर्सकी तथा बजर होते हैं। मोर्सकी को एक संदेश भेजने के स्थान पर एक बैटरी से जोड़ा जाता है तथा सदेश ग्रहण करने के स्थान पर इसके तार बजर से जोड़े जाते हैं। जब मोर्सकी को दबाया जाता है तो तार बैटरी से जुड़ जाते हैं तथा एक विद्युत धारा प्रवाहित होकर, संदेश पाने के स्थान पर बजर द्वारा तेज ध्वनि उत्पन्न करता है। इस बजर की भिन्न-भिन्न आवाजों को पढ़कर ही संदेश को शब्दों में बदला जाता है।

यदि अक्षर 'ए' का प्रयोग किया जाना हो तो मोर्सकी को एक बार धीरे से तथा दोबारा देर तक (०—) दबाकर संकेत भेजा जाता है। इसी प्रकार 'ई' के लिए केवल एक बार धीरे से मोर्सकी को दबाकर (०), तथा अक्षर 'एम' के लिये दो बार देर-देर तक (— —) दबाकर संकेत भेजे जाते हैं। इसी प्रकार वर्णमाला के सारे अक्षरों के भिन्न-भिन्न संकेत होते हैं। इस काम के लिए कुशल लोगों की आवश्यकता होती है। आजकल ये काम स्वचालित मशीन टेलीप्रिन्टर इत्यादि द्वारा ही अधिकतर किया जाने लगा है जिस कारण मशीनें मनुष्यों का स्थान भी लेती जा रही हैं।

****

प्र० : संसार में सबसे पहले सुरंग रेल कहाँ और कैसे बनाई गई थी ?

बद्रीप्रसाद वर्मा—गोला बाजार

उ० : संसार में सबसे पहले सुरंग रेल लन्दन शहर में बनी थी। रास्ते का नक्शा बनाकर सड़कों के बीच एक बड़ी खाई खोदी गई और उसमें रेल की पटरियां बिछा कर इसे ऊपर से बन्द कर दिया गया। जिससे ऊपर की सड़क पर फिर यातायात आरम्भ हो सके। और इस प्रकार सड़क के नीचे सुरंग रेल का आरम्भ हुआ। इस विधि को काटने तथा ढकने की विधि का नाम दिया गया। लन्दन में आरम्भ होने वाली इस रेल का रास्ता लगभग चार मील लम्बा था और ये पेरिन्गटन स्टेशन से फेरिन्गटन स्टेशन तक जाती थी। इसका चलना १८६३ सन में आरम्भ हो गया था। शुरू में इस रेल में भाप के ही इंजन का प्रयोग किया जाता था। इस कारण सुरंग में धुंआ अधिक होकर यात्रा को काफी अरुचिकर कर देता था। परन्तु संसार की प्रथम अद्भुत सुरंग रेल होने के कारण इसमें नित्य ही लगभग ३०,००० यात्री यात्रा करते थे। कुछ ही समय में इस सुरंग रेल का विस्तार आरम्भ हो गया।

लन्दन में ही १८९० सन में वास्तविक गहरी ट्यूब रेल का निर्माण हुआ। नई ट्यूब रेल बिजली के इंजनों द्वारा चलाई जाने लगी। शुरू-शुरू में इस रेल के डिब्बों में खिड़कियों को अनावश्यक समझा जाता था। गार्ड हर स्टेशन पर, स्टेशन का नाम पुकार कर यात्रियों को बताता था।

****

प्र० : उल्लू को रात को ही क्यों दिखाई देता है ? **चन्द्रप्रकाश—हाथरस**

उ० : हज़ारों वर्ष से उल्लू का एक विशेष महत्व समझा जाता है। आदिकाल से ही उल्लू की अनोखी आवाज के कारण ही कई अन्धविश्वास जुड़े हुए हैं। संसार के बहुत से भागों में उल्लू का सम्बन्ध मृत्यु से जोड़ा जाता है। यूनान में प्राचीनकाल में उल्लू को बुद्धि का प्रतीक समझा जाता था।

संसार के हर भाग में किसी न किसी प्रकार के उल्लू अवश्य पाये जाते हैं। उत्तर ध्रुवीय बर्फीले प्रदेशों में सफेद उल्लू पाये जाते हैं, सफेद होने के कारण ही ये उल्लू अपने शत्रुओं से अपनी रक्षा कर पाते हैं। पश्चिम अमरीका में अत्यन्त छोटे उल्लू पाये जाते हैं जिनका भोजन घास के कीड़े-मकोड़े होते हैं।

उल्लू के सारे शरीर की बनावट ऐसी है कि वो रात को सक्रिय रहे। रात को उल्लू की आवाज ऐसी डरावनी प्रतीत होती है कि उससे उल्लू के आसपास के जीव-जन्तु भयभीत हो जाते हैं। इस डर की अवस्था में हिलने डुलने से जो आवाज होती है उससे उल्लू अपने शिकार को बहुत सरलता से पकड़ लेता है। उल्लू के कानों के पास पंख इस विधि से होते हैं कि वो उसे धीमी से धीमी आवाज भी आसानी से सुनने में सहायता करते हैं।

उल्लू रात के अन्धेरे में भी अपने शिकार को सरलता से देख लेता है इसके दो कारण हैं इसकी आंख का डेला लचीला होता है और उल्लू अपनी आंख की पुतली को फैलाकर कितनी भी दूर तक फोकस कर लेता है। दूसरे पुतली को फैला कर अंधकार में से, अधिक से अधिक प्रकाश ग्रहण कर उल्लू बहुत अधिक देख पाता है। इसी असाधारण गुण के कारण उल्लू अधिकतर रात में ही विचरते हैं। उल्लू की आँखों की स्थिति भी ऐसी होती है कि उन्हें घुमाने के लिये उल्लू को पूरा सिर घुमाना पड़ता है।

उल्लू किसानों के लिए भी बहुत लाभदायक होता है क्योंकि ये खेतों में से चूहे इत्यादि का भी नाश करता है।

****

प्र० : क्या संसार में पाई जाने वाली सब मकड़िया के विष से मनुष्य को खतरा है तथा ये अपना जाला कैसे बुनती हैं ?

सतपाल प्रजापत—गुहला

मकड़ी को एक विषैला कीड़ा समझ कर लोग इनसे बहुत डरते हैं, वास्तव में संसार में पाई जाने वाली कोई-कोई मकड़ी अत्यन्त विषैली होती हैं। केवल दो प्रकार की मकड़ियों को छोड़ कर प्रायः सभी मकड़ियों के विष ग्रन्थियां होती हैं। परन्तु इस का ये अर्थ नहीं कि सब मकड़ियां मनुष्य को हानि पहुंचा सकती हैं। अधिकतर मकड़ियां अपनी रक्षा या अपना शिकार पकड़ने के समय ही विष का प्रयोग करती हैं। मकड़ियां अपनी विष ग्रन्थियों का संचालन भी स्वयं ही करती हैं।

मकड़ियों में जाला बुनने की एक अद्भुत शक्ति होती है। मकड़ी का जाला बनाने का तार मकड़ी के पेट की ग्रंथि में उत्पन्न होता है, जो हवा लगते ही सख्त हो जाता है। मकड़ियों के जाले भी तरह-तरह के होते हैं। इनमें पानी के नीचे बने जाले सबसे अलग प्रकार के होते हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

सवाल यह है ?
कि ऐसे पड़ौसियों से कहां भागें ?

संसार में कुछ भी एक जैसा नहीं है । पर हमें विश्वास है कि पड़ौसी हर जगह करीब-करीब एक जैसे ही होते हैं । जरा हमारे कुमार साहब से अपने पड़ौसियों की तुलना करके तो देखिये !

कहिये, अब आपका क्या विचार है अपने पड़ोसियों के बारे में ? ऐसे ही हैं या इनसे भी दो हाथ और आगे ?
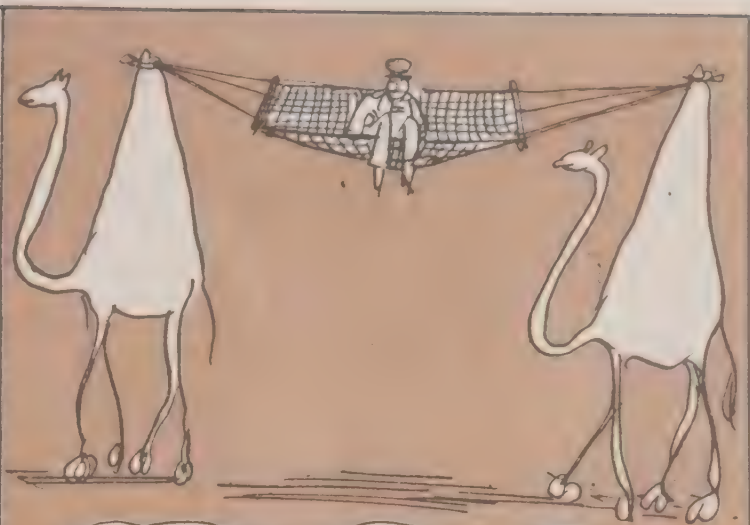
परेड का एक सबरस प्रोग्राम
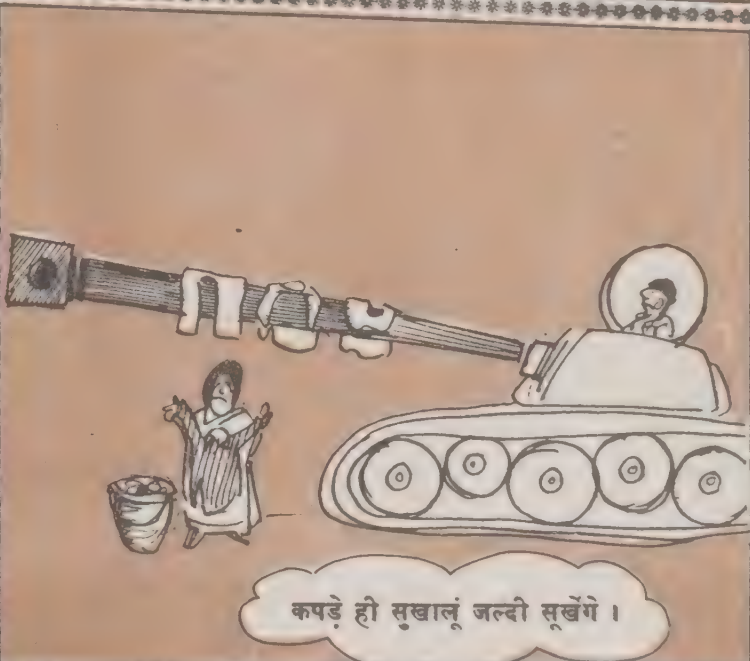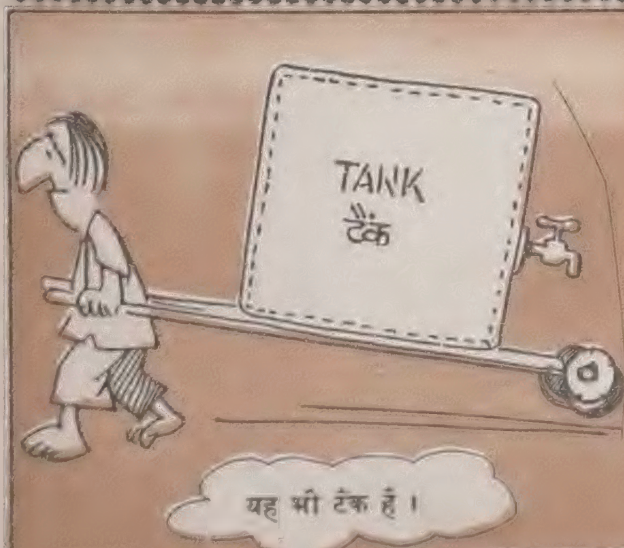
मदहोश
हैं ! इस मछली को क्या हो गया ? उल्टी क्यों हो रही है ?
कहीं बेचारी मर न जाए, मुझसे तो देखा नहीं जाता।
मदहोश होश में आ !
देखा नहीं जाता तो न सही पर यहां से हट जाओ। वर्ना सारी धूल तुम पर पड़ेगी।
जगह खाली है किराये के लिए।
TO LET
उड़ गई टोपी उड़ने दे।
हथियार से लैस महिला दस्ता।
बच्चे तो बच्चे रहेंगे।
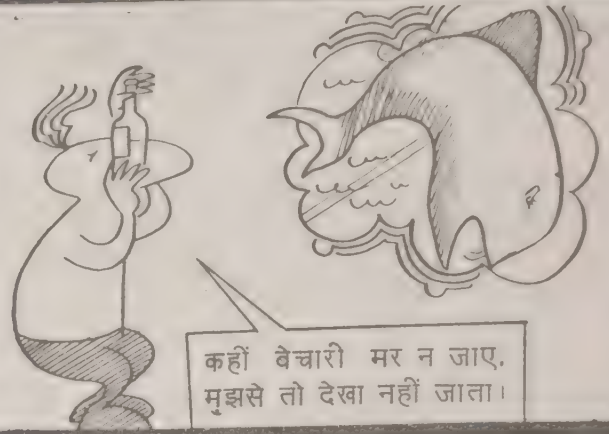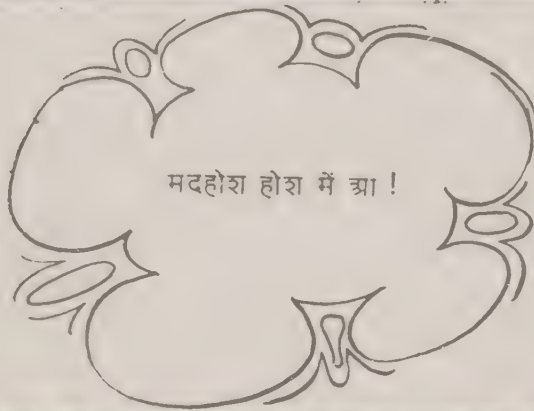
मेरा पुनर्जन्म

फिक्र तौंसवी

और फिर एक दिन यूं हुआ कि मेरा पुनर्जन्म हो गया। चारों ओर नजर डालने से मालूम हुआ कि मेरी बीवी ने मेरे साथ पुनर्जन्म नहीं लिया, क्योंकि वह मुझसे बोर हो चुकी थी और कहा करती थी कि अब वह किसी जन्म में भी मेरा साथ नहीं देगी। मेरा व्यक्तिगत विचार भी यही है कि बीवियों के साथ सिर्फ एक जन्म का मिलन ही काफी होता है। बीवी एक लतीफा है, जो एक बार दोहराने से ही बासी हो जाता है।

वास्तव में मैं दोबारा जन्म नहीं लेना चाहता था, क्योंकि मेरा विश्वास यह था कि आत्मा एक मुर्गे की तरह है, जो हर जन्म में कुकड़ूं कूं करता है। इसके ध्वनि-प्रभाव में कोई विशेष तब्दीली नहीं आती। इसलिए सच्चे दिल से मेरी यह इच्छा थी कि मेरी आत्मा या तो परम आत्मा में विलीन हो जाए और यदि यह सम्भव न हो तो मुझे मानव की बजाय उल्लू बना दिया जाए क्योंकि उल्लू भावना से रिक्त होता है और भावना ही पिछले जन्म में मेरी सबसे बड़ी वेदना थी।

परन्तु मेरे विचार, भगवान के विचारों से लगा न खा सके और भगवान ने अपने विशेष अधिकार का प्रयोग करते हुए मुझे फिर इन्सान के घर पैदा कर दिया। आह ! इन्सान के भाग्य में उल्लू बनना भी नहीं लिखा। जिस घर में मुझे दोबारा पैदा किया गया वह मेरे पूर्व घर से केवल आठ गज की दूरी पर था, अर्थात् केवल दो मकान छोड़ कर तीसरे मकान में मुझे पैदा कर दिया गया। सृष्टि-रचयिता की सृष्टि इतनी विस्तृत और विशाल थी कि वह अगर मुझे किसी और जगह पैदा कर देता तो जरा वैरायटी हो जाती और अगर मैं इतना ही गया-गुजरा था तो मुझे कांगो में पैदा कर देता, सुमात्रा द्वीप में पैदा कर देता, लन्दन भी कोई बुरा नहीं था। जरा अनुमान लगाइए, जिस गली के एक सिरे से मेरी लाश निकली उसी गली के दूसरे सिरे से मेरी आत्मा फिर प्रवेश कर गई। आश्चर्य यह है कि मेरी आत्मा ने दो जन्मों के बीच केवल दो मकानों की दूरी तय की।

मेरे पूर्व पिता जी का नाम किशन दास था, वर्तमान पिता जी का नाम बिशनदास था। दोनों किसी एक ही पद्य के तुक मालूम होते थे। दोनों पड़ोसी थे और पड़ोसी होने के कारण रीति-रिवाज के अनुसार एक-दूसरे के जानी दुश्मन थे और फिर अभी दोनों का पुनर्जन्म भी नहीं हुआ था। दोनों अभी तक जीवित थे। इन्सानी रिश्तों के इतिहास में शायद यह सबसे पहली दुर्घटना थी कि एक बेटे के दो बाप थे। दोनों जायज बाप थे और जीवित भी थे।

दो किश्तियों में पांव रखने का अनुभव मुझे उस समय हुआ जब मैंने होश की आंख खोली, अर्थात् जब मैं छः वर्ष का हुआ और मुझे अपने इर्द-गिर्द की हर वस्तु जानी-पहचानी लगी—वही गली, वह दरो-दीवार, वही गली के सिरे पर चारपाई पर बैठा खांसता हुआ बाबा मुकन्दा, जो गली की मेहतरानियों से यह कह कर धौंस जमाया करता था कि मेरा भाई किसी जमाने में म्युनिसिपल कमिश्नर था, इसलिए तुम्हें नौकरी से पदच्युत करा दूंगा। वही रामदुलारी जिसके पूरे नंगे बच्चे धूल-मिट्टी में रुला करते थे और जिन्हें मेरे दो जन्मों के अन्तर में भी तन ढांकने का वस्त्र नहीं मिला था और वही मेरा छोटा भाई कालू जो आवारा था और सिनेमा की टिकटें ब्लैक में बेचा करता था और कहा करता था—'भगवान हरेक को रोजी देता है चाहे किसी ढंग से दे।'

होश सम्भालने के दो-चार महीने तक तो मैं आश्चर्य में डूबा रहा और खामोशी की थ्योरी पर अमल करता रहा। धीरे-धीरे पूर्वजन्म की बहुत सी बातें मेरे मस्तिष्क के सागर में लाशों की तरह तैर तैर कर ऊपर उभरने लगीं और मेरी नाड़ियों में एक कुलबुलाहट-सी पैदा होती गई और आखिर एक दिन जैसे मैं बेअख्तियार होकर फट पड़ा और मैंने अपने पिता बिशनदास जी से विनती की—'महाराज ! क्षमा करें, आप मेरे पिता जी नहीं हैं।'

पिता जी महाराज मुस्करा दिए जैसे हर बाप अपने बच्चे की मासूम शरारत पर खुश हो जाता है और ऊंची आवाज से बोले—

'मैंने कहा श्रीमती जी, सुना तुमने, पुत्र महाशय जी क्या फरमाते हैं...ही ही ही !'

मैंने फिर विनती की—'मगर वह भी मेरी माता जी नहीं हैं।'

इस पर पिता जी महाराज गम्भीर हो गए और गम्भीर-सा थप्पड़ अर्ज करते हुए बोले—'अए नामुराद, तू कौन है ?'

'मैं फिक्र तौंसवी हूं।'

'फिक्र तौंसवी !' पिता जी को यह नाम कुछ जाना-पहचाना सा मालूम हुआ। शायद वह मेरे लेखों का अध्ययन करते रहे होंगे। बड़े विश्वास पूर्वक ढंग से बोले—'मगर वह तो स्वर्गधाम जा चुके हैं।'

मैंने विस्तारपूर्वक कहा—'बजा फरमाया लेकिन फिक्र तौंसवी स्थायी स्वर्गवासी नहीं हुए। वास्तव में उनकी किसी ने हत्या कर दी थी और...'

'मैं जानता हूं।'

'और उसके पश्चात ?'

'और उसके पश्चात तुम सीधे हमारे घर आ गए।' उन्होंने शायद मन ही मन कहा और फिर इस डर से कहीं यह सचमुच फिक्र तौंसवी न हो, मेरी परीक्षा लेते हुए कहने लगे—'अच्छा ! बताओ तुम्हारे पिता जी का क्या नाम था ?'

'किशनदास !'

'क्या काम करता था ?'

'हल्दी में मिलावट करता था ?

इससे पिता जी के चेहरे का रंग हल्दी की तरह पीला पड़ गया। ये उत्तर तो शत-प्रतिशत सही थे। और अधिक पीला होने के लिए उन्होंने कुछ और प्रश्न पूछे, जिनके उत्तर मैंने शत-प्रतिशत सही दिए। उदाहरणतया रामधन बजाज की बीवी ब्रह्मकुमारियों के साथ भाग गई थी और इलाके के स्कूल के प्रिंसिपल जगन्नाथ जी स्मगलिंग की घड़ियां बेचने के अपराध में गिरफ्तार हो गए थे और मन्दिर का पुजारी शिव शम्भू प्रसाद एक भगवती को भगवान के प्रत्यक्ष दर्शन कराने के लिए अपहरण करके ले गया था, आदि-आदि।

इन रहस्योदघाटनों ने मेरे पिता जी की दुर्दशा कर दी और जब उन्होने माता जी को बताया कि हमारे घर में जिस बेटे ने जन्म लिया है वह पूर्वजन्म में कवि और लेखक था तो माता जी ने सिर पीट लिया। हाय भगवान ! हमने कौन से बुरे [illegible] कि हमारे घर कवि पैदा हो गया है। मगर मैंने माता जी को तसल्ली दी इस [illegible]

नहीं बनूंगा बल्कि एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का कारोबार करूंगा, तो रोते हुए बोली—'तुम्हारा क्या विश्वास है बेटा! तुम्हारा केवल शरीर बदला है, आत्मा तो वही है और आत्मा अपना चरित्र थोड़े बदल लेती है।'

धीरे-धीरे सारे मुहल्ले और शहर में बावेला मच गया कि बिशनदास कमीशन एजेन्ट के घर जिस बच्चे दर्शनकुमार ने जन्म लिया है, वह वास्तव में फिक्र तौंसवी है। होते-होते यह खबर मेरे पूर्व पिता जी किशनदास तक जा पहुंची तो उन्हें बहुत रंज हुआ और सुना, उन्होंने अपने एक मित्र से कहा—'धिक्कार है ऐसे बेटे पर, जब वह जानता था कि बिशनदास से हमारी पुरानी तूं-तूं-मैं-मैं है तो वह इसके घर क्यों पैदा हुआ। वह बहुत कपूत निकला। कई बेटे जीवन में नहीं, मरने के बाद कपूत सिद्ध होते हैं।'

श्रीमान पूर्व पिताजी की इस विचार-धारा पर मुझे बड़ा खेद हुआ और फिर मालूम हुआ कि वह आवागमन की थ्योरी के ही विरुद्ध हो गए हैं और दुनिया भर से कहते फिरते हैं कि वह मेरा बेटा है ही नहीं और यह पुनर्जन्म का दर्शन सरासर ढोंग है...आह! इन्सान किस तरह अपने एक छोटे से घटिया स्वार्थ के लिए बड़े-बड़े दर्शनों को भी घटिया बना कर रख देता है हालांकि मुझे अच्छी तरह याद है कि श्रीमान पिताजी आवागमन के बड़े जोशीले समर्थक थे और फरमाते थे कि 'फिक्र बेटा, तुम्हारी मां पिछले जन्म में एक भेंस थी। एक बार मैंने उस भेंस को एक डंडा मारा था तो उसने धमकी दी थी कि मैं इसका बदला लूंगी। चुनांचे फिक्र बेटा, अब वह मेरी पत्नी बन कर मुझसे बदला ले रही है।'

मेरे पुनर्जन्म पर शौकीन लोगों के झुण्ड मेरे दर्शन को आने लगे। इन शौकीनों में मेरी प्रेमिका भी शामिल थी, जो मुझे चोरी-छिपे देखने आई। पहले तो मेरे वियोग पर रोती थी, अब मेरे संयोग पर रोई क्योंकि अब मुझ पर इश्क के बजाय बचपन सवार था और मैं भी श्रीमान पिता जी (पूर्व) की नजर बचा कर चोरी-छिपे अपनी पत्नी को देख आया और उसके विधवापन को देखकर चोरी-छिपे रोता रहा। यह एक विचित्र और दर्दनाक अवस्था थी, एक स्त्री का पति मौजूद था, मगर समाज उसे फिर भी विधवा कहे जा रहा था।

शहर के अखबारों ने एक शरारत यह की कि मेरे पिछले जन्म और वर्तमान जन्म के फोटो साथ-साथ प्रकाशित किए और इस तरह अपने ग्राहकों को मूर्खतापूर्ण प्रसन्नता प्रदान की और दूसरी ओर आवागमन के प्रशंसकों और विरोधियों के बीच गृहयुद्ध की खबरें आने लगीं और एक सूचना के अनुसार इन दंगों में बहुत से व्यक्ति जख्मी हो गए (जिनमें से एक की दशा गम्भीर बताई जाती है)। मेरे मित्र (पूर्व जन्म के) दोबारा मेरा शोक प्रकट करने आए और मुझे छः वर्ष का बेडौल-सा बच्चा देख कर कहने लगे—'फिक्र तौंसवी! तुम्हें क्या हो गया है?'

मैंने कहा—'मुझे पुनर्जन्म हो गया है। भगवान तुम सबको पुनर्जन्म करे।' लिहाजा जान पहचान के कई लोग मुझसे मिलने के लिए आए। मुहल्ले की बुढ़िया रामदेई ब्राह्मणी आई और मुझे देवता (न जाने किस प्रकार का) समझ कर मेरे चरण छूते हुए बोली—'बेटा! तुम भगवान से होकर आए हो। वहां तुमने मेरे बेटे दौलतराम घायल को तो नहीं देखा?'

मैं झट पहचान गया दौलतराम घायल, जिसके भाग्य में दौलत कम और घाव अधिक लिखे थे, रामदेई ब्राह्मणी का बेटा था। वह कवि था। कवि होने के कारण रीति-अनुसार गरीब और भूखा-नंगा था और घटिया और सस्ती जहरीली शराब पीते-पीते भगवान् को प्यारा हो गया था। मैंने कहा—'नहीं, मां जी, घायल साहब तो उधर कहीं दिखाई नहीं दिए। मेरा ख्याल है, कहीं पुनर्जन्म ले चुके होंगे।'

'लेकिन कहां? उसकी तो कुछ सुध-खबर ही नहीं बेटा।'

'अब मैं क्या जानूं मां जी। सम्भव है, मेरी तरह इस मुहल्ले में ही जन्म ले चुका हो।'

रामदेई ब्राह्मणी बेचैन हो गई (मां थी न), बोली—'तुम्हारे मुंह में घी शक्कर बेटा, कितना अच्छा होता अगर वह फिर मेरे ही घर जन्म ले लेता।'

मैंने बुद्धजीवियों की तरह उत्तर दिया—'जन्म तो कर्मों के अनुसार मिलता है मां जी!'

'कर्म तो उसके इतने अच्छे थे बेटा कि वजीर बन सकता था।'

'फिर तो वह नरक में गया होगा, मां जी?'

रामदेई मुझे गालियां देती हुई चली गई।

माननीय माता (वर्तमान) सच कहती थीं, मेरा चोला बदला था, आत्मा वही थी। मैं पुनर्जन्म के बाद भी वही फिक्र तौंसवी था, वही मूर्खों वाला खरापन। वही व्यर्थ लान-तान। और मैंने अनुभव किया कि लोग अब मेरी बातें सुन कर खुश कम होते हैं और नाराज ज्यादा। धीरे-धीरे लोगों ने हमारे घर आना-जाना कम कर दिया और फिर बन्द कर दिया। मुहल्ले के भद्र पुरुषों ने अपने बच्चों को आदेश दिया कि मेरे साथ खेल-कूद बन्द कर दें। औरतों ने मेरी मां से और मर्दों ने मेरे बाप से बातचीत करनी बन्द कर दी और अब मेरे माता-पिता मुझे सांप का बच्चा समझ कर पाल रहे थे। मेरी भूख मेरी भूख न रही, बल्कि कुत्ते की दुतकार बन गई। मेरे कपड़े मेरी चमड़ी उधेड़ने का कारण बन गए, मेरे खिलौने मेरी उंगलियां मरोड़ने लगे।

इस एक ही समय में आशा और निराशा वाली परिस्थिति ने मुझे बहुत उदास कर दिया और मैं प्रायः रात के काले गहरे

शेष पृष्ठ ३८ पर

मेड़ भाई, तुम्हारे बाल तो बड़े शानदार हैं। सर्दियों में बिल्कुल ठंड नहीं लगती होगी, कितने घने हैं। बस एक ही कमी है मियां, जरा आऊट ऑफ फैशन लगते हैं।
साल दर साल बालों का वही डिजाइन। तुम कहो तो एक बात बताऊं। इस ऊन का स्वैटर बनवा लो। हर साल नये डिजाइन का स्वैटर बनवा लेना। फैशन की दुनिया के सरताज बन जाओगे।
अच्छा स्वैटर कौन बनायेगा ?
स्वैटर मैं बनाऊंगी, तुम्हारे लिए यह भी सही। बिल्कुल लेटेस्ट डिजाइन का स्वैटर बनाऊंगी।
बुनाई क्या लोगी ?
अरे कुछ भी नहीं। अपने ही घर की बात है। बस तुम्हारे ऊन में से अपने लिए भी स्वैटर बना लूंगी। मेरा स्वैटर तो तुम्हारी पूंछ के बालों से ही बन जायेगा।
चलो मंजूर है।
देखो, कितना बढ़िया स्वैटर बना है। इस स्वैटर में तुम बिल्कुल विनोद खन्ना लगते हो।
वाकई मजा आ गया।
पंचतंत्र
यह बेवकूफ मेड़ अब ठंड के मारे मर जायेगा। सच ही है कि जो फैशन के जाल में फंस जाते हैं उनकी गर्मी दर्जी और ड्राइक्लीनर उतार देते हैं और ठंडा कर देते हैं।
मेड़ भैया, तुम नंगे हो ? क्या हुआ तुम्हारे नये डिजाइन के मॉड फैशन स्वैटर का ?
ड्राइक्लीन के लिये दिया था। ड्राइक्लीन वाला साढ़े तीन रुपये मांग रहा है। मेरी तो जायदाद ही ऊन थी उसका स्वैटर बन गया। ड्राइक्लीनिंग के पैसे कहां से दूं ?
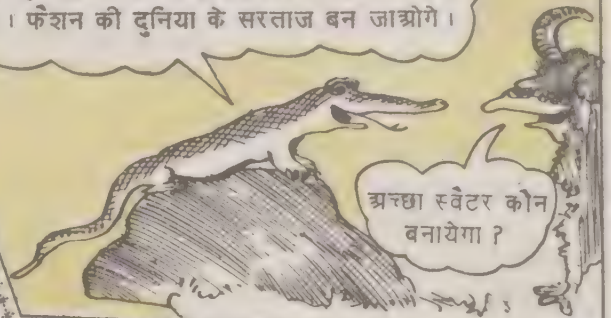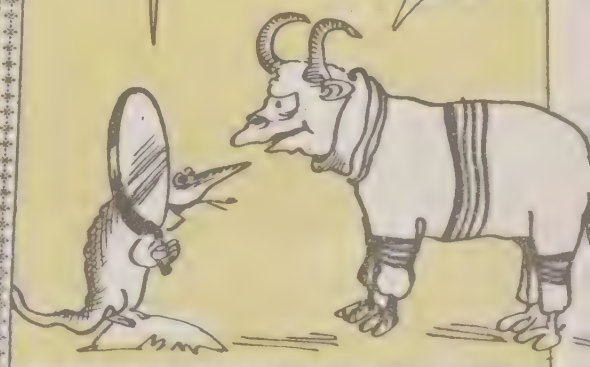
पृष्ठ ३६ से आगे

अंधकार में तकिये भिगो-भिगो कर रोया करता और भगवान से गिड़गिड़ाया करता—'हे रचयिता, मेरी याद मुझसे छीन ले, मेरी स्मृति सुन्न कर दे। पूर्वजन्म की हर देन वापस ले ले, लेकिन भगवान को यह शायद स्वीकार नहीं था।'

धीरे-धीरे मेरे लिए जीना दूभर होता गया। मेरा ताजा-ताजा मासूम दिल मुहब्बत का भूखा था, लेकिन मेरी भूख घृणा से मिटाई जाती। भगवान ने मुझे नया जन्म अवश्य दिया था, नई बुद्धि नहीं दी थी, इसलिए मैं दुनिया के सामने यह झूठ भी नहीं बोल सका कि मैं फिक्र तौंसवी नहीं हूं बल्कि एक गीदड़ हूं, गधा हूं, च्यूंटी हूं और मैं तुम में से किसी को नहीं जानता—न बिशनदास को, न किशनदास को, न रामदेई को।

और इसीलिए दुनिया अब मुझसे खामख्वाह भयभीत हो गई। मेरी छाया से भी लोग दूर भागने लगे। कोई मेरे पास तक नहीं फटकता था। मैं छः वर्ष का एक मासूम सा बेगुनाह बच्चा इतनी बड़ी बूढ़ी दुनिया से अलग हो गया, और अपना जीवन केवल अपने सा ही गुजारने लगा।

लेकिन एक दिन अचानक अकेलेपन का यह घेरा टूट गया।

वास्तव में अखबार में किसी ने शिकायत कर दी थी कि जिस व्यक्ति ने फिक्र तौंसवीं का कत्ल किया था वह छः वर्ष तक ढूंढ़ा नहीं जा सका, अब उसकी खोज की जाए और फिक्र तौंसवी से ही पूछा जाए कि हत्या किसने की थी, क्योंकि वह पुनर्जन्म की शत-प्रतिशत बातें ठीक बता रहा है तो कोई वजह नहीं कि वह अपने हत्यारे के बारे में जानता न हो।

इस शिकायत पर शहर भर में मेरा मुर्दा जिन्दा हो गया। चारों ओर से नई खोज की मांग होने लगी। एक गुस्सैली भीड़ ने तो इस सम्बन्ध में थाने को आग लगा दी। चुनांचे अधिकारी लोग भयभीत हो गए और एक पुलिस अफसर छानबीन के लिए मेरे पास पहुंचा—बोला, 'फिक्र साहब!'

'फिक्र तौंसवी मर चुका है।' मैंने कहा।

'हाय! उसकी मृत्यु ही तो हमारी मुसीबत का कारण बनी हुई है। आप ही हमें इस मुसीबत से छुटकारा दिलाएं और बतायें कि आपको किस व्यक्ति ने कत्ल किया था।'

'एक स्कूटर ड्राइवर ने!'

'कारण?'

'बहुत मामूली। उसने निश्चित भाड़े से चार आने ज्यादा मांगे। मैंने उसे शर्म दिलाई। उसे क्रोध आ गया और छुरा निकाल कर उसने मेरे पेट में भोंक दिया।'

'केवल चार आने के लिए, इतने बड़े साहित्यकार की हत्या कर दी?'

'जी हां। क्योंकि उन दिनों चार आने में एक सन्तरा आ जाता था, मगर साहित्यकार एक-एक आने में मिल जाते थे।'

पुलिस अफसर को गुस्सा आ गया। बोला—'हम उसे फांसी पर लटका देंगे। आप उसका नाम और हुलिया बताइए। स्कूटर का नम्बर बताइए।'

मुझे उसका हुलिया और स्कूटर का नम्बर अब भी पूरी तरह याद था, लेकिन... लेकिन...क्या यह उसे फांसी दे देंगे? मेरा नन्हा-सा मासूम शरीर सिर से पांव तक कांप उठा। मुझे यूं अनुभव होने लगा, जैसे फांसी का फंदा स्कूटर ड्राइवर की बजाय धीरे-धीरे मेरी गर्दन की ओर बढ़ रहा है...मैं उसका हुलिया नहीं बताऊंगा वरना ये उसे मार देंगे...नहीं-नहीं, मैं नहीं...मुझे यहां से भाग जाना चाहिए और...मैं सचमुच भाग खड़ा हुआ। जोर-जोर से भागता गया। गलियां, सड़क, बाजार और फिर मैं पीछा करने वालों की आंख बचा कर एक मोड़ पर मुड़ गया और एक तंग अंधेरी गली में घुस गया और फिर मुझे यूं लगा जैसे इस अंधेरे में एक चेहरा उभरा है। यह चेहरा भयानक था। उसकी आंखों में खून उतरा था। उसके हाथ में एक चमकीला छुरा था। मैंने उसे पहचान लिया यह वही था, बिलकुल वही...वही स्कूटर ड्राइवर, बिलकुल वही स्कूटर ड्राइवर...

और उसने छुरा मार कर मुझे एक बार फिर कत्ल कर दिया।

'क्या बेबी अपने पिता के समान लगता है?'

'अगर यह मैंने कह दिया तो मेरे पति मुझे जान से मार डालेंगे।'

●

'शादी से पहले आप मुझे इतने उपहार दिया करते थे अब क्यों नहीं देते?' पत्नी ने पूछा।

'क्या तुमने कभी सुना है कि मछली पकड़ने के बाद भी मछेरा उसे गोली खिलाता है?' पति ने मुस्करा कर उत्तर दिया।

●

'मुझे आपकी पत्नी से भेंट करने का सौभाग्य अभी तक नहीं हुआ है।'

'आपको यह कल्पना किस तरह हुई कि मेरी पत्नी से भेंट करना सौभाग्य का ही विषय है?'

●

पत्नी— लगता है मैं पहले से अधिक तगड़ी हो गई हूं।

पति—क्यों?

पत्नी—तीन चार साल पहले मैं तीन चार रुपये का सामान खरीद कर खुद घर नहीं ला सकती थी। पर अब दस रुपए का सामान भी आसानी से ला सकती हूं।

●

'वह सामने एक काली, मोटी स्त्री खड़ी है न। कौन है वह?'

'वह मेरी पत्नी है।'

आपकी पत्नी! माफ कीजिए। मुझसे बड़ी गलती हुई।'

'जी गलती तो मुझसे हुई थी।'

'मेरी पत्नी कह रही थी कि तुम्हारी पत्नी ने कल क्लब में पार्लियामेंटरी योग्यता का सुन्दर प्रदर्शन किया।'

'क्यों न करतीं? पिछले सात वर्ष से वे हमारे घर की स्पीकर भी तो हैं।'

गणतंत्र दिवस क्यों मनाएं?
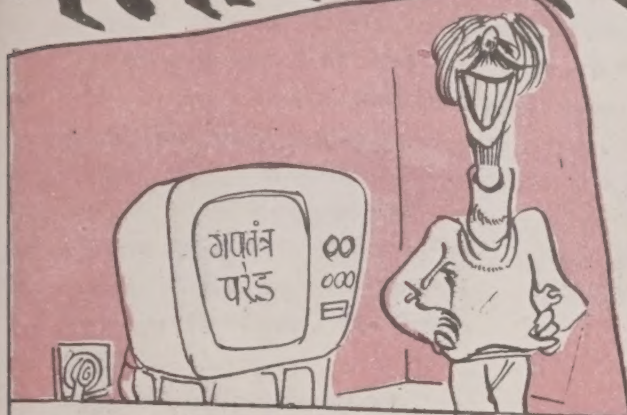
दिल्ली के टी० वी० वालों को असल में पहली बार एहसास होता है कि तीन हजार रुपए बेकार नहीं गए। अपने टी० वी० की अकड़ में उनकी गर्दनें बांग देते मुर्गों की तरह उठी रहती हैं।

भारत के दूर-दूर के कोनों के लोक नृत्य देख दिल्ली वालों को पता लगता है कि दफ्तर-घर की दुनिया के इलावा भी और कोई दुनिया है। उसका मुँह खुला रह जाता है। मक्खियां उसके मुँह में अन्दर जाकर पूरा इन्सपैक्शन कर सकती हैं। उसे उल्टी आ गई तो भी अच्छा है पित्त, बलगम साफ हो जायेगा।

दिल्ली के नर-नारियों के जिस्मों से चर्बी पिघल जाती है और देह सुडौल बन जाती है। क्योंकि परेड देखने आये रिश्तेदार ऐसी सफाई कर जाते हैं कि बाद में जनवरी के बाकी दिन दिल्ली वाले आधा पेट खाकर गुजार देते हैं।

परेड के ऐवज में फौजी भाइयों को रम का एक्स्ट्रा कोटा मिलता है। उसे अपने सिविलियन दोस्तों में जनवरी के सर्दी के मौसम में बांट कर फौजी भाई पुण्य कमा सकते हैं।

दिल्ली के मूंगफली और आइसक्रीम उद्योग को बढ़ावा मिलता है। उस दिन खूब बिक्री होती है।

परेड देखने वाले दर्शक इण्डिया गेट के लॉनों की घास दबा कर सत्यानाश कर देते हैं। मूंगफली के छिलके और गंदे कागज बखेर जाते हैं। हालत ऐसी होती है कि एक महीने बाद तक प्रेमी लोगों का दिल वहां बैठने को नहीं करता। इस तरह कई रोमांस आगे बढ़ने से रुक जाते हैं व स्कैंडल बनने से बच जाते हैं।

पृष्ठ १२ से आगे

किया कि वह उन तीनों को गोलियों से भून देगी। जिन लोगों को वह गोली मारना चाहती थी, सरस्वती के ख्याल में वे कैलाश के हत्यारे थे।'

'मतलब यह कि सरस्वती अपने फ्लैट से कैलाश के हत्यारों को मारने के लिए निकली थी?' इन्स्पेक्टर ने पूछा।

'हां। उन हत्यारों को भी मालूम था कि जब सरस्वती को कैलाश के कत्ल की खबर मिलेगी तो वह बदला लिये बिना नहीं रहेगी। इसीलिए सरस्वती को हत्यारों के ठिकाने तक नहीं पहुंचने दिया गया और रास्ते में ही ठिकाने लगा दिया।' यह कह कर बलजीत कुछ सोचने लगा।

'अब आप क्या सोचने लगे?'

'रुकिये, इन्स्पेक्टर साहब! अनिला ने बताया है कि टैक्सी में पड़े बक्से में रायफल है। यह वही रायफल है जो सरस्वती अपने साथ लाई थी। मैं जरा रायफल देख लूं।' यह कह कर बलजीत ने टैक्सी में से लम्बा बक्सा बाहर खींच लिया। उसमें से रायफल निकाल कर उसने खटका खोला। उसमें तीन गोलियां थीं।'

'तीन गोलियां!' इन्स्पेक्टर के मुंह से निकला।

'हां। टैक्सी ड्राइवर के बयान के मुताबिक सरस्वती जानती थी कि इस रायफल में तीन गोलियां हैं और वह एक-एक कर के तीनों को गोली मार देने पर उतारू थी। इन्स्पेक्टर साहब, आप अपनी कार्रवाई पूरी कीजिये, मैं जरा राजीव के साथ जा रहा हूं।'

'कहां?'

'राजीव दो दिन तक प्रोफेसर नवल किशोर पांडे के यहां रह कर आया है। यह कोई खास रिपोर्ट लाया है। इसके बारे में मैं आपको बाद में सूचित कर दूंगा।'

'वह तो ठीक है, मगर यह रायफलों की पहेली तो खोलते जाइये। एक नहीं, दो नहीं, अब तक तीन-तीन रायफलें बरामद हो चुकी हैं।'

'इन्स्पेक्टर साहब! मैं समझता हूं कि ये रायफलें ही हमें इस केस को हल करने में मदद देंगी।' यह कहने के साथ ही बलजीत मुड़ा और उसने अपने साथियों को चलने का इशारा किया।

सेठ रघुनन्दन परेशान खड़े बलजीत को देखे जा रहे थे।

'आइये सेठ जी, यहां से चलें।'

'बलजीत बाबू! आप जल्दी से यह केस हल कर डालिये, वर्ना यह परेशानी मेरी जान ले लेगी।'

'अब ज्यादा देर नहीं लगेगी, सेठ जी! इस केस पर थोड़ी-थोड़ी रोशनी पड़ने लगी है।' यह कह कर बलजीत, सेठ रघुनन्दन, अनिला और राजीव कारों की ओर बढ़े।

होटल के अपने कक्ष में आकर राजीव ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा, 'इन दो दिनों में प्रोफेसर नवल किशोर पांडे पर कोई हमला नहीं हुआ। उसके फ्लैट के आसपास मुझे कोई भी ऐसा आदमी नजर नहीं आया जो संदिग्ध हो। पहली रात को सिर्फ एक खास बात हुई।'

'वह क्या?'

'प्रोफेसर सोते-सोते बड़बड़ाता रहा, मगर मैं उसकी बड़बड़ाहट समझ नहीं पाया। हो सकता है कि मुझे ही ऐसा लगा हो।'

'क्या?'

'कि वह बड़बड़ा रहा है। हां, दूसरी रात मुझे उसकी बड़बड़ाहट बड़ी रहस्यपूर्ण लगी।'

'वह कैसे?' बलजीत ने पूछा।

'बलजीत बाबू! वास्तव में वह बड़बड़ाहट नहीं थी।' राजीव ने कहा।

'और क्या था?'

'अजीब-सी आवाज।'

'क्या मतलब?'

'वह आवाज हर पांच मिनट बाद दुहरायी जाती थी। बड़ी भयानक आवाज थी। मैं उठ कर प्रोफेसर के बेडरूम में गया। मैंने देखा कि प्रोफेसर बेसुध सोया पड़ा था। उसके होंठ भी नहीं हिल रहे थे। जाहिर था कि बड़बड़ाहट का मुझे धोखा लगा था। तभी पांच मिनट बाद फिर एक भयानक आवाज आई। मैं यह तो नहीं जान सका कि आवाज कहां से आ रही थी, मगर आ जरूर रही थी। शायद प्रोफेसर होंठ बन्द करके वह आवाज पैदा कर रहा था।

'वह आवाज कैसी थी?' बलजीत ने पूछा।

'ऐसा मालूम होता था जैसे प्रोफेसर किसी को धमकी दे रहा हो। मैंने उस आवाज को समझने की कोशिश की तो यह समझ पाया—मैं सब को कत्ल कर डालूंगा! कोई नहीं बचेगा! तुम सबको कुत्तों की मौत मरना होगा!'

'ये तो वाकई बड़ी भयानक आवाजें हैं!' अनिला बोल उठी।

बलजीत गहरे विचारों के साग[र में]
डूब गया। लगभग दो मिनट वह सोच में [डूबा]
रहा। आखिर झटके से उठते हुए उसने क[हा,]
'आओ, हम नवल किशोर पांडे के यहां च[लें।']

थोड़ी देर में तीनों जासूस कार [से]
प्रोफेसर पांडे के फ्लैट के सामने पहुंच ग[ए।]
फ्लैट बन्द था।

बलजीत ने मास्टर चाबी से फ्लैट [का]
दरवाजा खोला और तीनों जासूस सा[थ]
अन्दर दाखिल हुए।

'अनिला और राजीव हैरान थे [कि]
प्रोफेसर की गैरहाजिरी में बलजीत [को]
उसका फ्लैट खोलने की क्या जरूरत [आ]
पड़ी।

बलजीत सीधा प्रोफेसर के बेडरूम [में]
पहुंचा। उसने पलंग को ध्यान से देखा [और]
देखते-देखते अचानक चौंक पड़ा। उसे पलं[ग]
के सिरहाने की ओर चौड़े पाये में एक पे[च]
दिखाई दिया। पेच काफी बड़ा था और ऐ[सी]
जगह लगा था जहां उसकी जरूरत न थी[।]

उसे चौंकते देख कर राजीव औ[र]
अनिला भी चौंक पड़े।

बलजीत ने जेब में से चाकू निकाल[ा]
और पाये में लगा पेच खोलने लगा। पेच [के]
निकलते ही पाये पर से चौड़ी-चपटी तख्[ती]
फर्श पर गिर पड़ी।

तीनों की आंखें आश्चर्य से फैल गईं।

पलंग के पाये के अन्दर छोटे कैमरे [के]
बराबर काली डिबिया-सी थी। उस डिबि[या]
के साथ एक घड़ी लगी हुई थी। घड़ी [की]
दोनों सुइयां ग्यारह बज कर दस मिनट प[र]
रुकी हुई थीं।

बलजीत ने हाथ बढ़ा कर पाये में [से]
वह कैमरा जैसी डिबिया निकाल ली।

क्रमशः

...ना द्वारा डा. पृथ्वी- ...बगीची गोलछियां, ...र सिटी, १७ वर्ष, ...रना और बड़ों की ...ना।

हरीश मदान, ३६६, भोलानाथ नगर, शाहदरा-३२, २० वर्ष, जासूसी करना, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह करना।

प्रो० ओमप्रकाश मावतवाल, ५७/१३०, शतरजी मोहाल, कानपुर, २० वर्ष, कहानी-कविता लिखना, पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।

सघवानी गुलाम हुसैन, जे. एस. एम. एस. होस्टल, रूम नं० २३, वाडीबंदर, बम्बई-६, १६ वर्ष, भयानक कहानी लिखना, आर्ट बनाना।

जे. पी. वर्मा, फिलिप्स रेडियो मनोहर लाल ऐन्टरप्राइस, जी० टी० रोड, क्लाक टावर, लुधियाना, पंजाब, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

हबीब तमामा, हनुमान धोरा, सुजानगढ़, जिला चुरू, (राज.) १६ वर्ष, तस्वीर को निखारते रहना, पत्र-पत्रिकायें पढ़ना व पिक्चर देखना।

इम्तियाज आलम, क्वा० नं० डी ३४, सबतालडीहवाशरी, जी० पुरुलिया, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फुटबाल खेलना, पत्र-मित्रता करना।

...द रवीवंसरा, २१, ...ास, पाली (राज०), पत्र-मित्रता करना, पढ़ना, क्रिकेट खेलना, ...र हंसाना।

रमेश कुमार आचार्य श्री तनसुख आचार्य, अध्यापक, खरचल (अलवर), १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना, पत्र व्यवहार करना।

अशोक कुमार चतुर्वेदी द्वारा जगदीश गुप्ता, लच्चाराम की गली, लोहा मण्डी, ग्वालियर, २० वर्ष, नावल पढ़ना, भूतों के बारे में ज्ञान लेना।

श्री नरबहादुर 'गोल्डी' द्वारा करम चन्द रामलोक एण्ड के. एल-२, मोरिन्डा, २२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, घूमना-फिरना।

बाबू एस. आलम खान मेहबूब द्वारा अश्शुमियां, मो. मस्जिद के पास बुधवारा, भोपाल २० वर्ष, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना।

जयराम एस. तलरेजा, १७४, नानक नगर, भुसावल, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, स्कूटर चलाना, सिनेमा देखना, दोस्ती करना, रेडियो सुनना।

मंगत राम भोला, मकान नं० ५६४३/३, छोटा बाजार, अम्बाला शहर, २० वर्ष, दीवाना पढ़ना, माता-पिता की सेवा करना, गाने गाना।

...गुप्ता, बीमल स्टोर, ...टन स्ट्रीट, कलकत्ता-७ ..., पत्र-मित्रता करना, पढ़ना व सुनना, फिल्में

बृज शर्मा, मास्ट्रान स्ट्रीट नजदीक जेलखाना, कपूरथला, (पंजाब), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना, कमेंट्री सुनना।

तरुण कुमार, २१-२-४३६, चारकमान, हैदराबाद (आं.प्र.) २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट एकत्रित करना व फरमाईस भेजना।

सत्यनारायण खत्री, सुन्दर बिल्डिंग रोड, २० वर्ष, फिल्में देखना, रेडियो सुनना और गाने गाना, दीवाना पढ़ना पत्र-मित्रता करना।

मन्जीत सिंह धींगड़ा, पिन्ड बोपा राय पो० आ० गोराया, जिला जालंधर ठिकलोर पंजाब २० वर्ष, मोहल्ले में एक-दूसरे को लड़ाना और आनन्द लेना।

रमेश कुमार परसवानी, शंकर स्वीट नरघैया, ३५३, जबलपुर, अंग्रेजी पिक्चर देखना, दीवाना पत्रिका पढ़ना, डाक टिकट संग्रह करना।

गगन सिंह थापा, नेहरू ग्राम, देहरादून, २२ वर्ष, दीवाना पढ़ना तथा प्रचार करना, घूमना और फिल्मों में काम करना।

...न्द गुप्ता, वार्ड. १२४, ..., दिल्ली-२८, २० ...ट खेलना, डाकटिकट ...ना, व्यापार करना, ...ढ़ना।

अरुण कुमार माहेश्वरी, मुंगलपुरा, राठ, जि० हमीरपुर, १७ वर्ष, ट्रेन और बसों की यात्रा करना और सिनेमा देखना, पत्र-मित्रता करना।

पदम बहादुर क्षेत्री पो० आ० दुलियाजान, सेटलमेन्ट एरिया नं० २११२, १४ वर्ष, खिड़कियों से झांकना, बड़ों के साथ बातें करना।

अखिलेन्द्र 'विशाल' प्रधान डाक घर के पीछे, माया बाजार, गोरखपुर, (यू. पी.), १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना, बिछड़ों से मिलने की चाह।

रविन्द्र राजोरा, रेलवे स्टेशन के सामने गिदड़बाहा (पंजाब), १६ वर्ष, अनपढ़ों के साथ अंग्रेजी बोलना, पढ़ना तथा दीवाना पढ़ना।

मुकेश कुमार सी-३/६४, अशोक विहार, दिल्ली-५२, १६ वर्ष, फिल्में देखना, दोस्त बनाना, हंसना और हंसाना, कहानियों की किताबें पढ़ना।

राकेश सेतिया, ६२७/१६, नई बस्ती, गुड़गांवा, (हरियाणा), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, अध्यापकों को तंग करना।

...ीवास्तव, गांव टून्डली ...ा, जिला आगरा, ... दादागिरी करना, ...हंसाना पत्र-पत्रिकाएं

दीपक कुमार अरोरा, ८ ब, नवीन जूनियर हाई स्कूल काशीपुर, जिला नैनीताल, १२ वर्ष, लोगों को तंग करना, फिल्मों के पोस्टर देखना।

सुनील कुमार सेठी ३३/१, मानसिंह नगर, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना, चलती बसों में चढ़ना और उतरना।

श्यामसिंह सिकरवार, कंघवाली गली, मदने की गोट, ग्वालियर, (म. प्र.), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पत्रों के जवाब देना, क्रिकेट खेलना।

फिरोज आलम, ६८, फेथफुल गंज, छावनी कानपुर, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्में देखना, दीवाना तथा अन्य पत्र-पत्रिकायें पढ़ना।

...वाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______
पता ______
आयु ______ शौक ______

...या बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

३० जनवरी से ५ फरवरी ७८ तक

मेष : यह सप्ताह आपके लिए पर्याप्त अच्छा है, परिश्रम करके रुके हुए कार्य बनाए जा सकते हैं, व्यापार में भी उन्नति होगी, भ्रमण व मनोरंजन आदि का विशेष कार्यक्रम तय होगा।

वृष : नई योजना प्रारम्भ करने के लिए यह सप्ताह अच्छा रहेगा, व्यापार में नवीनता महसूस होगी और उन्नति भी, स्थाई साधनों से धन लाभ होता रहेगा, कोई अप्रिय घटना होने की संभावना है।

मिथुन : यह सप्ताह भी अच्छा रहेगा, जो परिश्रम आपने विगत समय में किया है उस के सुपरिणाम मिलने शुरू हो जावेंगे, जो हानियां गतमास में या पिछले दिनों हुई हैं उसकी पूर्ति का साधन बन जायेगा।

कर्क : सफलता के मार्ग में कुछ बाधाएं उत्पन्न होंगी, सुस्ती या बेकारी का प्रभाव रहेगा, फिर भी हालात पहले से अब ठीक चलने लगेंगे, कुछेक समस्याएं अभी कायम रहेंगी लेकिन वातावरण काफी सुधरेगा।

सिंह : विगत दिनों की तुलना में यह सप्ताह कुछ अच्छा रहेगा और लाभप्रद भी, परन्तु यह ध्यान रखें कि क्रोध या जल्दबाजी में कोई ऐसा काम न कर बैठें जिससे बाद में पछताना पड़े।

कन्या : आर्थिक समस्या दूर होती महसूस होंगी और हालात भी पहले से साजगार होते जावेंगे, धन लाभ का कोई नया रास्ता सामने आवेगा, भ्रमण व मनोरंजन आदि के कार्यक्रम पर व्यय काफी होगा।

तुला : यह सप्ताह संघर्षमय भी है और दिलचस्प भी, कामकाज में सुधार एवं उन्नति महसूस होगी परन्तु धन प्राप्ति में कुछ बाधाएं पड़ेंगी और देर से प्राप्त होगी, खर्चा अधिक होगा।

वृश्चिक : सप्ताह पहले से कहीं अधिक अच्छा रहेगा, अनेक समस्याओं का समाधान हो जावेगा, कुछ विशेष काम भी पूरे होते दिखाई देंगे, परिश्रम पहले से भी अधिक करना होगा।

धनु : सफलता प्राप्त करने के लिए आपको कठोर परिश्रम करने की आवश्यकता है, मानसिक परेशानी जो घरेलू समस्याओं से पैदा होगी, जिसका प्रभाव आपके कारोबार पर भी पड़ सकता है।

मकर : नई योजना प्रारम्भ करने के लिए यह सप्ताह लाभप्रद सिद्ध होगा, अफसरों से मेल जोल, सरकारी कामों में सफलता मिल जावेगी, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, परिवार से सुख अच्छा मिलेगा।

कुम्भ : कुछेक समस्याओं से छुटकारा मिल जावेगा, कामकाज की स्थिति में सुधार करना पड़ेगा या स्वतः ही हो जावेगा, घर-परिवार की एवं नातेदारों की ओर से परेशानी बनेगी।

मीन : कुसंगति से सावधान रहें, कोई झूठा आरोप लगा सकते हैं जिससे मानहानि होने का भय है, फिर भी यह सप्ताह पहले से अच्छा है, भाग्य साथ देता रहेगा और समय पर सहायता मिलती रहेगी।

'मैं भूतकाल और भविष्यकाल में विश्वास नहीं रखता।'

शशि कपूर

विजय भारद्वाज

अठारह मार्च १९७८ को शशिकपूर चालीस वर्ष के हो जायेंगे। फिल्म 'दीवार' में अपने से कम उम्र वाले अमिताभ बच्चन के यह छोटे भाई बने हैं और वास्तव में छोटे ही मालूम पड़ते हैं जबकि अमिताभ इनसे कई वर्ष छोटा है। है ना आश्चर्य की बात! अपने आपको 'मेन्टेन' करने में देव आनन्द के बाद इन्हीं का नाम आता है।

इन्होंने अपना जीवन रंगमंच से आरम्भ किया और फिल्मों में सर्वप्रथम यह बाल कलाकार के रूप में पर्दे पर आये, वह फिल्म थी 'आवारा'। फिल्म 'चार दीवार' में यह पहली बार नायक के रूप में दर्शकों को दिखाई दिये और उसके बाद तो रोमांटिक हीरो के रूप में यह बेहद प्रसिद्ध हो गए और एक के बाद एक उन्हें कई फिल्में मिलती चली गयीं।

शशि कपूर की अपनी एक खास विशेषता है, यह कभी उदास नहीं होते। सदा हंसते-मुस्कराते रहते हैं। इनके चेहरे पर कभी मनहूसियत नहीं दिखाई देती। अपनी पत्नी जैनिफर व बच्चों को यह बेहद प्यार करते हैं और शूटिंग की लगातार भाग-दौड़ के बावजूद अपने परिवार के लिए यह समय निकाल लेते हैं। शशि कपूर के अपने शब्दों में मेरा दिन सवेरे नौ बजे से शुरू होकर रात देर तक खत्म होता है। जब तक मैं शूटिंग्ज से निबट कर रात को घर आता हूं बच्चे सो जाते हैं। इसलिए मैं सवेरे छः बजे उठ जाता हूं, सात बजे हम सब मिल कर लंच करते हैं, बच्चे स्कूल, कालिज चले जाते हैं और मैं ...अपने कालिज यानि...स्टूडियो चला जाता हूं। इस तरह सुबह बच्चों से मिलने के कारण मेरी उनसे 'कन्टीन्यूटी' बनी रहती है।

अपने स्वभाव में बेहद खुशमिजाज हैं शशि कपूर। इनकी कई फिल्मों ने अपार सफलता प्राप्त की है। 'धर्म पुत्र', 'प्यार किये जा', 'वक्त', 'हसीना मान जायेगी', 'जहां प्यार मिले', 'जब-जब फूल खिले', 'रोटी कपड़ा, और मकान', 'कभी-कभी', व हाल ही में प्रदर्शित फिल्म 'आप बीती'।

आज भी शशि कपूर के पास बेहद फिल्में हैं। फिल्म के पिट जाने से या हिट होने से इन पर कभी कोई असर नहीं पड़ा। यह आज भी सदाबहार हीरो की तरह अटल हैं। निर्माता इन पर जरा सा जोर देते हैं तो यह समय न होने पर भी 'हां' कर देते हैं और बिना स्क्रिप्ट पढ़े फिल्म साईन कर लेते हैं।

'फिल्म 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के बारे में आपके क्या विचार हैं?'

'यह फिल्म वास्तव में भाई साहब (राजकपूर) के लिए एक चुनौती है। लेकिन वह ऐसी चुनौतियों का हंस कर मुकाबला करते हैं। वैसे फिल्म सीधी-सादी है। हां! इस पर मेहनत की जा रही है वह अवश्य कोई गुल खिलायेगी। शशि कपूर ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

शशि कपूर की आने वाली उल्लेखनीय फिल्में इस प्रकार हैं—'राहु केतु', 'दि विटनैस' 'दो गुरू', 'पाखण्डी', 'क्रोधी', 'हीरालाल-पन्नालाल', 'अतिथि', 'मुकद्दर', 'त्रिशूल', 'फांसी', 'दिलकश', 'सुहाग', 'ज्वाला मुखी' और 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'।

एटलस एपार्टमैंट
तेपियन-सी रोड, बम्बई-४०००२६